माघ – १

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३०, अङ्क १९ | २०७८, माघ १-१५ | पूर्णाङ्क ७०९

प्रकाशक

**सर्वोच्च अदालत**

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७२८, ४२००७२९, ४२००७५० Ext.२५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २१३१ (बिक्री)

फ्याक्सः ४२००७४९, पो.व.नं. २०४३८

**Email:** info@supremecourt.gov.np, **Web:** www.supremecourt.gov.np

## सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

| | |
|---|---|
| माननीय न्यायाधीश श्री सपना प्रधान मल्ल, सर्वोच्च अदालत | - अध्यक्ष |
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री लालबहादुर कुँवर, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री कृष्णजीवी घिमिरे, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य |
| रजिस्ट्रार श्री निर्मला पौडेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| अधिवक्ता श्री रूद्रप्रसाद पोखेल, कोषाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| अधिवक्ता श्री ऋषिराम घिमिरे, सचिव, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| प्रा.डा.विजय सिंह सिजापति, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय | - सदस्य |
| सहरजिस्ट्रार श्री हरिराज कार्की, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य सचिव |

**सम्पादक :** श्री ध्रुवकुमार ढकाल

**सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू**

शाखा अधिकृत श्री दिपक पोखरेल
शाखा अधिकृत श्री योमा मुलपती
शाखा अधिकृत श्री नरेश कार्की
नायब सुब्बा श्री निरजकुमार ढुंगाना
नायब सुब्बा श्री भीमराज घिमिरे
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कम्प्युटर अपरेटर श्री मञ्जु खडका
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युत दाहाल

**भाषाविद् :** श्री रामचन्द्र फुयाल

**बिक्री शाखा**

नायब सुब्बा श्री निलदेव रिजाल

**मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

मुद्रण अधिकृत श्री कान्छा श्रेष्ठ
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन
नायब सुब्बा श्री शिवहरि अधिकारी
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
सिनियर प्रेसम्यान श्री अर्जुन घिमिरे
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी
बुकबाइन्डर श्री धनमाया मानन्धर


**विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू**

| | |
|---|---|
| इजलास नं. १ | ११ |
| इजलास नं. २ | ४ |
| इजलास नं. ३ | २ |
| इजलास नं. ४ | २ |
| इजलास नं. ५ | ८ |
| इजलास नं. ६ | ५ |
| **जम्मा** | **३२** |

| | |
|---|---|
| इजलास नं. ७ | ५ |
| इजलास नं. ८ | २ |
| इजलास नं. ९ | २ |
| इजलास नं. १० | २ |
| इजलास नं. ११ | ४ |
| रायबाझी फैसला | १ |
| **जम्मा** | **१६** |

**कूल जम्मा ३२ + १६ = ४८**

# नेपाल कानून पत्रिका

मा प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

# www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

**खोज्ने तरिका**

सर्वप्रथम **www.nkp.gov.np** लगइन गरेपश्चात् गृहपृष्ठमा देखिने **शब्दबाट फैसला खोज्नुहोस्** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गर्नुहोस् । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा वेबसाइटको दोस्रो शीर्षकमा रहेको **वृहत् खोज** खोलेर विभिन्न किसिमले फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेत हेर्न सक्नुहुनेछ ।

**यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछः**

**सअ बुलेटिन, २०७..., ... .... – १ वा २, पृष्ठ ....**

**(साल) (महिना)**

**उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०७८, माघ – १, पृष्ठ १**

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

## सूचना

**"<u>नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन</u>"** को **"<u>वार्षिक ग्राहक</u>"** बन्न चाहनेका लागि **<u>२०७६ वैशाख अङ्क</u>**देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **<u>नेपाल कानून पत्रिका रू.७५</u>** र **<u>सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रू.४०</u>** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ।

---

**मूल्य रू.४०।–**

**मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छापाखाना**

## विषयसूची


| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **इजलास नं. १** | | | **१ – १५** |
| **१.** | निषेधाज्ञा | राजेश श्रेष्ठ वि. सिटिजन्स बैंक इन्टरनेसनल लिमिटेडसमेत | **१** |
| **२.** | निषेधाज्ञा | चन्द्रकुमार श्रेष्ठ वि. हिमालयन स्न्याक्स एन्ड नुडल्स प्रा.लि. | **१** |
| **३.** | निषेधाज्ञा | मिना श्रेष्ठ वि. विजय भन्ने फणिन्द्रबहादुर श्रेष्ठसमेत | **२** |
| **४.** | परमादेश | प्रकाशमणि शर्मासमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत | **३** |
| **५.** | वैदेशिक रोजगार कसुर | फारूक अहमद मुसलमान वि. नेपाल सरकार, निसार अहमद मुसलमान वि. नेपाल सरकार | **५** |
| **६.** | लागु औषध (खैरो हेरोइन) | नेपाल सरकार वि. राममणि थापा मगर | **६** |
| **७.** | लागु औषध | नेपाल सरकार वि. ओमबहादुर सोमै | **८** |
| **८.** | लिखत दर्ता बदर दर्ता | नरेन्द्रकुमार सेन्दाङसमेत वि. मधुकला लिम्बू सेन्दाङ | **९** |
| **९.** | घर टहरा भत्काई खिचोला मेटाई हक कायम | रूपा सिजापति खड्कासमेत वि. तेजप्रसाद तिमल्सीना | **१०** |
| **१०.** | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार | राजेश भन्ने टौबहादुर खड्का वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कमला खड्कासमेत | **१२** |
| **इजलास नं. २** | | | **१५ – १९** |
| **११.** | उत्प्रेषण | मिनबहादुर सिवाकोटी वि. स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत | **१५** |
| **१२.** | अंशबन्डा | मनोहर थापा वि. कान्छी थापासमेत | **१६** |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १३. | अंश चलन | कविता गौतम वि. रम्भा गौतम पोखरेल | १६ |
| १४. | अंश | राजकुमारी गुरूङ वि. सरिता गुरूङ, निरबहादुर गुरूङसमेत वि. सरिता गुरूङ | १८ |
| **इजलास नं. ३** | | | **१९ – २०** |
| १५. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. कुमार सरदार बाँतर | १९ |
| १६. | अपहरण तथा शरीर बन्धक | नेपाल सरकार वि. प्रविन बोगटी भन्ने टेकबहादुर बोगटीसमेत | १९ |
| **इजलास नं. ४** | | | **२० – २८** |
| १७. | कर्तव्य ज्यान र ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. कुन्दन भन्ने मनोज तुम्बापो | २० |
| १८. | उत्प्रेषण / परमादेश | नरेश दुगड वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत | २२ |
| **इजलास नं. ५** | | | **२३ – ३०** |
| १९. | उत्प्रेषण | खगेन्द्र नवजीवन केन्द्रसमेत वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय, काठमाडौंसमेत | २३ |
| २०. | परमादेश | जिल्ला प्रहरी कार्यालय रौतहट, गौरसमेत वि. मोहमद मेराज आलम | २३ |
| २१. | वैदेशिक रोजगार ठगी | नेपाल सरकार वि. बद्री गौडेल, बद्री गौडेल वि. नेपाल सरकार | २४ |
| २२. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. ङिमारिता शेर्पासमेत | २५ |
| २३. | उत्प्रेषण / परमादेश | हरिप्रसाद दाहाल वि. राष्ट्रिय बिमा संस्थानसमेत | २७ |
| २४. | टन्टा खिचोला चलन | लगन राउत अहिरसमेत वि. मेनेजरप्रसाद यादव | २७ |
| २५. | उत्प्रेषण / परमादेश | कमल साह कानू वि. गणेश साह कानूसमेत | २८ |
| २६. | जबरजस्ती करणी | कमल नेपाली वि. नेपाल सरकार | २९ |
| **इजलास नं. ६** | | | **३० – ३४** |
| २७. | वैदेशिक रोजगार कसुर | माधव पोखरेल वि. नेपाल सरकार | ३० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. सरोज रामदाम भन्ने डम्बरकुमार रामदाम | ३१ |
| २९. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. राजाराम धिताल | ३२ |
| ३०. | ठगी | नेपाल सरकार वि. प्रेमसागर पौडेल | ३२ |
| ३१. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. मिङक्युर लामा तामाङ | ३३ |
| **इजलास नं. ७** | | | **३४ – ३७** |
| ३२. | परमादेश | रघुवर राजभण्डारी वि. शुकदेव राजभण्डारीसमेत | ३४ |
| ३३. | उत्प्रेषण | डम्बरदेव उप्रेती वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत | ३५ |
| ३४. | लागु औषध | नेपाल सरकार वि. शुभम राई | ३६ |
| ३५. | उत्प्रेषण / परमादेश | श्रीराम न्यौपानेसमेत वि. नेपाल इन्जिनियर्स एसोसिएसन पुल्चोक, ललितपुरसमेत | ३६ |
| **इजलास नं.८** | | | **३७ - ३९** |
| ३६. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नेपाल सरकार वि. जीवनराज शाही | ३७ |
| ३७. | कर्तव्य ज्यान | मेची भन्ने बलबहादुर चुदारा वि. नेपाल सरकार | ३८ |
| **इजलास नं.९** | | | **३९ - ४१** |
| ३८. | कर्तव्य ज्यान र जबरजस्ती चोरी | नेपाल सरकार वि. प्रेम गन्धर्व | ३९ |
| ३९. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण / उत्प्रेषण / परमादेश | विकास थापा मगर वि. बालसुधार गृह भक्तपुरसमेत | ४० |
| **इजलास नं.१०** | | | **४१ - ४४** |
| ४०. | कर्तव्य ज्यान | अनुप राईसमेत वि. नेपाल सरकार, कृष्ण चौधरी वि. नेपाल सरकार | ४२ |
| ४१. | कर्तव्य ज्यान | लक्ष्मीप्रसाद अधिकारी वि. नेपाल सरकार | ४३ |
| **इजलास नं.११** | | | **४४ - ४८** |
| ४२. | कर्तव्य ज्यान र डाँका | नेपाल सरकार वि. रामजन्मप्रसाद यादव | ४४ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **४३.** | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | महादेव तिमिल्सिना वि. कारागार कार्यालय, जगन्नाथदेवल, काठमाडौंसमेत | **४५** |
| **४४.** | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. हर्के खत्री | **४७** |
| **४५.** | किर्ते जालसाजी | आशाराम मुनकर्मी वि. गणेशबहादुर बजिको | **४७** |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **रायबाझी फैसला** | | | **४८ - ५२** |
| **४६.** | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | गौतम लामिछाने वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, भरतपुर चितवनसमेत | **४८** |

## इजलास नं.१

१

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७४-CI-०१२८, निषेधाज्ञा, राजेश श्रेष्ठ वि. सिटिजन्स बैंक इन्टरनेसनल लिमिटेडसमेत

पुनरावेदक निवेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् कानून व्यवसायीले बहसको क्रममा लिलामको कार्यका विरूद्धमा लिलाम बदर मुद्दा दायर भई सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको भनी व्यक्त गर्नुभएकोले विपक्षी बैंकबाट ऋण लिएबापत जग्गा लिलामीमा गएको देखियो । सो लिलामीउपर काठमाडौं जिल्ला अदालतमा लिलाम बदर मुद्दा परेको र सो लिलाम बदर मुद्दाबाट ठहरेबमोजिम हुन सक्ने नै हुँदा निवेदन जिकिरको औचित्यता नदेखिएकोले प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने भनी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०२।२४ मा भएको आदेश मिलेकै देखिन आएकोले यी पुनरावेदक निवेदकको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार कारणबाट निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुनु पर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने भनी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।२।२४ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : सुरथप्रसाद तिमल्सेना

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २ गते रोज १ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७४-CI-०१२९, निषेधाज्ञा, राजेश श्रेष्ठ वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, बबरमहल, काठमाडौंसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७४-CI-०२७४, निषेधाज्ञा, चन्द्रकुमार श्रेष्ठ वि. हिमालयन स्न्याक्स एन्ड नुडल्स प्रा.लि.

निवेदन दाबीको चाउचाउको प्याकिङ मेटेरियल्स र्‍यापरलाई अन्तःशुल्क ऐन, २०५८ को दफा ३(क)(३) मा उल्लेख भएबमोजिमको वस्तुको कच्चा पदार्थको रूपमा मान्नुपर्ने भएबाट निवेदन मागबमोजिम चाउचाउको कच्चा पदार्थ र्‍यापर्सको आयात तथा खरिदमा तिरेको अन्तःशुल्कलाई निवेदकले बिक्रीमा उठाएको अन्तःशुल्कबाट कट्टा गरेको रकम तथा त्यसमा जरिवाना र विलम्ब शुल्क लगाउने गरी अन्तिम अन्तःशुल्क निर्धारण आदेश नगर्नु नगराउनु र त्यस्तो अन्तःशुल्क जरिवाना तथा विलम्ब दस्तुर लगाउने उठाउने असुलउपर गर्ने कार्य नगर्नु नगराउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने भनी सुरू पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०५।१५ मा भएको आदेश मिलेकै देखिन आएकोले पुनरावेदक विपक्षीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, प्रमाण एवं यस अदालतबाट २०७० सालको रिट नं.०७०-*CI*-०५२३ को उत्प्रेषणमिश्रित परमादेश मुद्दामा

भएको फैसलासमेतबाट निवेदन मागबमोजिम चाउचाउको कच्चा पदार्थ न्यापर्सको आयात तथा खरिदमा तिरेको अन्तःशुल्कलाई निवेदकले बिक्रीमा उठाएको अन्तःशुल्कबाट कट्टा गरेको रकम तथा त्यसमा जरिवाना र विलम्ब शुल्क लगाउने गरी अन्तिम अन्तःशुल्क निर्धारण आदेश नगर्नु नगराउनु र त्यस्तो अन्तःशुल्क जरिवाना तथा विलम्ब दस्तुर लगाउने उठाउने असुलउपर गर्ने कार्य नगर्नु नगराउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने भनी सुरू पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०५।१५ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७४-CI-०२७५, निषेधाज्ञा, मिना श्रेष्ठ वि. विजय भन्ने फणिन्द्रबहादुर श्रेष्ठसमेत

निवेदिकाको दाजु यी प्रत्यर्थी फणिन्द्रबहादुर श्रेष्ठसमेतले आफ्नो पैत्रिक सम्पत्ति अंशियारहरूको मन्जुरी नलिई अंश हक मार्ने मनसाय लिई अधिकृत वारेसबाट पास गरेको राजीनामा लिखतलाई जालसाज घोषित गरिपाउँ भनी यी निवेदिकासमेतउपर जालसाज र लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम मुद्दाहरू दायर भई उल्लिखित राजीनामा लिखत जालसाजी ठहरी सो लिखतसमेत बदर हुने गरी सुरू अदालतबाट मिति २०७१/१२/३० मा भएको फैसला सदर हुने ठहरी उच्च अदालत विराटनगरबाट फैसला भई उक्त जग्गामा प्रत्यर्थीहरूको हक स्थापित भइरहेको अवस्था देखिने।

पुनरावेदक निवेदिकाले दाबी गरेको कि.नं.१९६ को जग्गामा निजको आफ्नो निर्विवाद हक स्वामित्व नै स्थापित हुन सकेको देखिन नआएकोले उक्त जग्गामा विपक्षी प्रत्यर्थीहरूले निवेदन दाबीमा उल्लेख गरिएबमोजिमको उक्त जग्गामा रहेको बाँस तथा सिसौका रूखहरूसमेत लुटपिट गरी घरसमेत भत्काई नयाँ निर्माण कार्यहरू गर्न लागेको भन्ने निवेदिकाको आशंका मान्न मिल्ने देखिएन । प्रत्यर्थी विपक्षीहरूले निवेदिकालाई हानि नोक्सानी पुऱ्याउने गरी कुनै कार्य भए गरेको नदेखिएबाट निवेदन दाबीबमोजिम प्रत्यर्थीहरूका नाममा निषेधाज्ञा जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नरहेको हुँदा निषेधाज्ञाको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने रिट निवेदन खारेज हुने भनी उच्च अदालत विराटनगरबाट भएको फैसला मिलेकै देखिन आएको हुँदा यी पुनरावेदक निवेदिकाको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, यी पुनरावेदक निवेदिकाको निवेदन मागबमोजिमको निषेधाज्ञा जारी गरिरहनु नपरी प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने भन्नेसमेत बेहोराको उच्च अदालत विराटनगरबाट मिति २०७४।०२।०७ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः- सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटरः- मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २ गते रोज १ शुभम्।

## ४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या. श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०६७-WO-०५९३, परमादेश, प्रकाशमणि शर्मासमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत

रिट निवेदनसाथ पेस गरेको बालबालिका खोजतलास समन्वय केन्द्रको बालबालिका हराएकोसम्बन्धी प्रतिवेदनमा सो प्रतिवेदन तयार गर्ने संस्था, निकाय वा अधिकारीको दस्तखत, छाप वा सो प्रतिवेदन तयार गर्ने भनिएको समन्वय केन्द्र कुन ऐन, नियम वा कानूनद्वारा स्थापित संस्था हो, सो कुरा पनि प्रतिवेदनबाट खुलेको देखिँदैन । सो समन्वय केन्द्र निजी तवरबाट गठित गैरसरकारी संस्था भएको वा सरकारी तहबाट गठन गरिएको संस्था हो सो पनि खुलेको प्रतिवेदनबाट देखिन आउँदैन । उक्त प्रतिवेदन निजी संस्था वा गैरसरकारी संस्थाबाट अध्ययन गरी तयार गरिएको वा कुन कानूनअन्तर्गत गठित संस्था वा सोबाट अधिकार प्राप्त संस्थाबाट अध्ययन गरी तयार गरिएको हो ? सो सम्बन्धमा रिट निवेदकले खुलाएको नदेखिएकोले ती सबै तथ्य स्पष्टरूपमा निवेदकबाट खुलाउन लगाई उक्त प्रतिवेदन कुनै सरकारी निकायबाट कुन कानूनअन्तर्गत तयार गरिएको हो सोको आधिकारिकता देखिने गरी सो प्रतिवेदन तयार गर्ने संस्थाबाट प्रमाणित गराई पेस गर्नू भनी निवेदकलाई सुनाई साथै सो प्रतिवेदन लागु गर्न विपक्षीहरूको कुन कानूनद्वारा काम, कर्तव्य तोकिएको हो, सोसमेत निवेदकबाट खुलाउन लगाउनु र सोबमोजिमको तथ्य र बेहोरा खुली आएमा नियमबमोजिम पेस गर्नू भन्ने बेहोराको यस अदालतबाट आदेश भएकोमा सोसम्बन्धी पुष्टि हुने प्रमाणित कागजातहरू पेस भएको देखिएन । निवेदनमा यो कानूनको यो व्यवस्था पालना भएन भन्ने निवेदन जिकिरसमेत देखिएन । कानूनी उपचार माग गर्दा निश्चित कानून उल्लङ्घन भएको भन्ने निश्चित गरिएको हुनुपर्दछ । अन्यथा आदेश जारी गर्ने सही आधार हुन नसकिने ।

वस्तुत: परमादेशको आदेश कुनै सार्वजनिक निकाय वा पदाधिकारीले आफ्नो कानूनबमोजिमको कर्तव्य पूरा गर्न इन्कार गरेको अवस्थामा त्यस्तो निकाय वा पदाधिकारीलाई कानूनबमोजिम कर्तव्य निर्वाह गर्ने गराउने प्रयोजनका लागि जारी हुने हो । यो सार्वजनिक कर्तव्य बहन गर्ने कुनै पनि व्यक्ति वा निकायले त्यस्तो कर्तव्य पूरा नगरेको कारण उनीहरूको नाउँमा कानूनबमोजिम गर्नुपर्ने कर्तव्य पूरा गर्नू भनी माथिल्लो अदालतबाट जारी गरिने आदेश हो । यो रिट जारी गर्न निवेदन माग गर्न पाउने कानूनी अधिकार जसको नाउँमा रिट जारी हुने हो, यस्तो व्यक्ति वा निकायसँग हुनुपर्छ । निवेदकले माग गरेअनुरूपको कार्य गर्नुपर्ने कानूनी दायित्व सार्वजनिक निकाय वा पदाधिकारीसँग हुनुपर्दछ । यो उपचारात्मक प्रकृतिको विशेषाधिकार सम्पन्न रिट हो । मौलिक हक प्रचलनको लागि, कानूनबमोजिमको कार्यसम्पादन गराउने प्रयोजनका लागि, संविधान वा कानूनद्वारा सुम्पिएका अन्य सार्वजनिक कर्तव्य निर्वाह गराउने प्रयोजनको लागि परमादेशको आदेश जारी हुन सक्दछ । मातहत अदालत वा निकायमा विचाराधीन विषयवस्तुमा परमादेशको रिटबाट माथिल्लो अदालतले सामान्यतया हस्तक्षेप भने

गर्दैन । प्रस्तुत निवेदनमा संविधान तथा कुन कानूनको उल्लङ्घन विपक्षीहरूद्वारा भयो र कुन प्रयोजनका लागि परमादेश जारी हुनुपर्ने भनी स्पष्ट उल्लेख भएको नदेखिने ।

निवेदकहरूले उठाएका विषयवस्तु मानव अधिकारसँग सम्बन्धित त्यसमा पनि बाल अधिकारसँग सम्बन्धित विषयभित्र पर्दछन्। कुनैपनि राज्य बालबालिकाको सम्बन्धमा संवेदनशील हुनैपर्छ । राज्य संवेदनशील भई निवेदकले उठाएका विषयवस्तुको सम्बोधन पनि हुनैपर्छ । निवेदकले उठाएका विषय बाल अधिकारको संरक्षणसँग सम्बन्धित हुन् र उनीहरूले सम्भावनालाई विकसित एवम् प्रस्फुटित गर्न सक्दछन् भन्नेमा पनि दुइमत छैन । सुरक्षित एवम् स्नेहपूर्ण वातावरणको अभावमा आजका बालबालिकाहरू भोलिका लागि योग्य एवम् सामर्थ्यवान् नागरिक बन्न नसक्ने तथ्य स्वयम्मा निर्विवाद छ । बालबालिकासम्बन्धी ऐनले पनि बालबालिकाको सर्वोत्तम हितलाई केन्द्रमा राखेर विभिन्न व्यवस्था गरेको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा उठाइएका विषयवस्तु राज्यले एकैपटक लागु गर्नसक्ने अवस्था नहुन सक्छ । बालबालिकाको हित संरक्षणका खातिर नै बाल कार्यविधि नियमावली, २०६३ जारी भएको छ । देशका विभिन्न ठाँउमा बाल सुधार गृहको स्थापना भएको छ । बालबालिकाको हित संरक्षणकै लागि केन्द्रमा केन्द्रीय बाल कल्याण समिति र जिल्लामा जिल्ला बालकल्याण समितिको व्यवस्था गरेको छ । विपक्षीहरूबाट पेस भएका लिखित जवाफ हेर्दा बालबालिकाका हक अधिकारहरू क्रमिक रूपमा कार्यान्वयन गर्न खोजिएको देखिन्छ। बालबालिकाको सुरक्षाको व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाउन नेपाल सरकारले बालबालिकासम्बन्धी कानूनमा आवश्यक संशोधन परिमार्जन तथा संगठित अपराध (नियन्त्रण) ऐन निर्माणको प्रक्रिया प्रारम्भ गरिसकेको छ भनी लिखित जवाफमा उल्लेख गरेको देखिँदा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिने ।

तसर्थ, उल्लिखित आधार र कारणहरूबाट प्रस्तुत रिट निवेदनमा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

तथापि प्रस्तुत विषयवस्तु मानव अधिकारसँग सम्बन्धित त्यसमा पनि बाल अधिकारसँग सम्बन्धित विषय भएकोले कुनैपनि राज्यले बालबालिकाको सम्बन्धमा संवेदनशील भई बालबालिकाका सम्बन्धमा उठाएका विषयवस्तुको सम्बोधन गर्नुपर्ने कुरा निर्विवाद छ । आजका बालबालिकाहरू भोलिका लागि योग्य एवम् सामर्थ्यवान् नागरिक बनाउने विषय देशको मान सम्मान, प्रतिष्ठा, सुशासन तथा संविधान प्रदत्त हक अधिकारसँग आबद्ध रहेको विषय भएकोले नेपाल सरकारलगायत सम्बन्धित निकाय तथा पदाधिकारीहरूको ध्यानाकर्षण गराई आगामी दिनहरूमा गम्भीर भई यस प्रकृतिका विवादहरू सिर्जना हुन नदिनेतर्फ सचेत रहने छ भन्ने यस अदालतले तार्किक र वैधानिक अपेक्षा (Logical and Reasonable Expectation) राखेको हुँदा नेपाल सरकारलगायत सम्बन्धित निकाय, पदाधिकारीका लागि निम्नबमोजिम निर्देशनात्मक

आदेश जारी गरिएको छः-

१. हराएका सम्पूर्ण बालबालिकाहरूको सुरक्षित उद्धार एवम् खोजतलास गरी पत्ता लगाउने व्यवस्था मिलाउनू।
२. हराएका सम्पूर्ण बालबालिकाहरूका पीडित बाबु आमा एवम् अभिभावकहरूको बालबालिका हराएका कारण भोग्नुपरेको शारीरिक, मानसिक यातना तथा आर्थिक क्षतिपूर्तिसमेतलाई ख्याल गरी तत्काल अन्तरिम प्रकृतिको राहतको आदेशका साथै उचित क्षतिपूर्तिको व्यवस्था गर्नू।
३. बाबु आमा एवम् परिवारको सत्य तथ्य जान्न पाउने अधिकारलाई सुनिश्चित गर्न हराएका बालबालिकाहरूको प्राथमिकताका साथ निरन्तर खोजी गर्नु र यस सम्बन्धमा अनुसन्धानमा भइरहेको प्रगतिका बारेमा सम्बन्धित परिवारलाई निरन्तर जानकारी गराउनू।
४. बालबालिकाहरूलाई अपहरण, बेचबिखन, शोषण एवम् दुर्व्यवहार गर्नेलाई न्यायको दायराभित्र ल्याउने व्यवस्था मिलाउनू।
५. हराएका बालबालिकाहरूको सुरक्षित उद्धार एवम् खोजतलासका लागि एउटा उच्च अधिकार सम्पन्न प्रभावकारी संयन्त्र निर्माण गर्नू गराउनू।
६. फेला परेका सम्पूर्ण बालबालिकाहरूको सामाजिक पुनर्स्थापना गर्नू तथा बाबुआमा एवम् कानूनी संरक्षक फेला नपरेका बालबालिकाहरूलाई आवश्यक हेरचाह, संरक्षण, पालनपोषण एवम् शिक्षाको आवश्यक व्यवस्था गर्नू, गराउनू।

इजलास अधिकृत : राजकुमार दाहाल

शाखा अधिकृतहरू : हिरा डंगोल / विमला पौडेल

इति संवत् २०७४ साल पौष १७ गते रोज २ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी,** ०७३-CR-०२५६, ०२८९, वैदेशिक रोजगार कसुर, फारूक अहमद मुसलमान वि. नेपाल सरकार, निसार अहमद मुसलमान वि. नेपाल सरकार

टिकट बनाउनको लागि श्रम स्वीकृति लिए नलिएको हेरी जाँच गर्नुपर्ने हुनाले राहदानी राखेको र भेटिएका भिषा सबै राहदानी लागिसकेका हुन् भनी प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगार विभाग तथा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बयान गरेको देखिएको छ। निज प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगारमा पठाउने काम नगरेको भनी कसुरमा इन्कार रहेको देखिन्छ। निजहरूको बयान अनुसन्धानको क्रममा कागज गर्ने मानिसहरूले लेखाएको बेहोरा तथा प्रतिवादीका साक्षीहरूको बकपत्रसमेतबाट समर्थित रहेको छ । बरामदी राहदानीहरू टिकट बनाउनको लागि प्रतिवादीहरूलाई दिएको भनी राहदानीबाहकहरूले वैदेशिक रोजगार विभागमा कागज गरेको पाइन्छ । निजहरूले आफूहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा पठाउने भनी प्रतिवादीहरूले रकम लिई नपठाई ठगी गरेको भनी किटानी दाबी लिएको देखिएन । निजहरूले प्रतिवादीहरूउपर जाहेरी दिएको अवस्थासमेत छैन । पीडितहरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा आई बकपत्र गरेकोसमेत

देखिँदैन। प्रतिवादी निसार अहमद फैजीले जी.आर. म्यान पावरबाट साउदी पठाइदिन्छु भनेको हो भनी तुफेल अहमद मुसलमान, जुवेर अहमद मुसलमान र मोहम्मद हारून मुसलमानले वैदेशिक रोजगार विभागमा कागज गरेकोसम्म देखिए तापनि निजहरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्रको लागि उपस्थित हुन नआएकोले प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ बमोजिम निजहरूको उक्त कथनलाई शंकारहित प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्ने नदेखिने।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार फौजदारी मुद्दामा प्रतिवादीको कसुर प्रमाणित गर्ने दायित्व वादीको हुन्छ । तर प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० तथा ४३ बमोजिमको कसुर गरेको भन्ने विश्वसनीय सबुद प्रमाण वादी पक्षबाट पेस हुन सकेको देखिएन । इजाजतपत्र नलिई प्रतिवादीहरूले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय सञ्चालन गरेको भन्ने मिसिल प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन। विश्वसनीय सबुद प्रमाण नभई प्रतिवादीहरू संलग्न रहेको इहसान टुर्स एन्ड ट्राभल्सबाट केही राहदानीसमेतका सामानहरू बरामद भएको आधारमा मात्र निजहरूलाई कसुरदार ठहर गर्न न्यायोचित नहुने।

अतः विश्वसनीय सबुद प्रमाणको अभावमा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम वैदेशिक रोजगार कसुर गरेको भनी अनुमानको भरमा कसुरदार ठहर गर्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादीहरू निसार अहमद मुसलमान र फारूक अहमद मुसलमानलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम जनही रू.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार रूपैयाँ) जरिवाना र एक वर्ष छ महिना कैद सजाय हुने ठहऱ्याएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७२।४।१८ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने।

इजलास अधिकृत : महेश खनाल

कम्प्युटर : अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २० गते रोज ५ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०७५-CR-०९३७, लागु औषध (खैरो हेरोइन), नेपाल सरकार वि. राममणि थापा मगर*

प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा प्रतिवादी दिपेस लामालाई १ ग्राम लागु औषध खैरो हेरोइन बिक्री गरेको तथ्यमा साबित भई बयान गरेको र प्रतिवादीहरूले आफू साबित भई अरूलाई पोल गरेकोमा उसको पोललाई समेत प्रमाणमा नलिई प्रतिवादीलाई सफाइ दिने गरी भएको उक्त फैसला त्रुटिपूर्ण रहेको भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरको साथबाट लागु औषध बरामद भएको देखिँदैन। प्रतिवेदकले यी प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरको नाम कहीँकतै उल्लेख गरेकोसम्म देखिएको छैन । प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा प्रतिवादी दिपेस लामालाई १ ग्राम लागु औषध खैरो हेरोइन बिक्री गरेको भनी खुलाएको देखिए पनि

अदालतमा बयान गर्दा मिति ०७३।११।०६ गते यी प्रतिवादीहरू दिपेस लामा, रंजित आले र जोसुवा भोलनसमेतलाई खैरो हिरोइन बिक्री गरेको कुरामा इन्कार गरी बयान गरेको देखिन्छ । अदालतसमक्ष आफू कसुरमा साबित भई बरामदित लागु औषध खैरो हिरोइन जितेन तामाङबाट खरिद गरेको हो राममणि थापालाई चिन्दिन भनी दिपेस लामा, रंजित आले मगर र जोसुवा भोलनले बयान गरेको देखिन्छ । अनुसन्धानमा लागु औषध राममणि थापाबाट खरिद गरेको भनी बयान गर्ने व्यक्तिले नै अदालतमा आएर बरामद भएको लागु औषध शिव थापा मगरले बिक्री गरेको होइन जितेन तामाङले बिक्री गरेको हो भनी भनिरहेको देखिन्छ । यस अवस्थामा सहप्रतिवादीहरूले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको पोल अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि प्रमाणित भएको नदेखिँदा प्रहरी हिरासतमा रहेको अवस्थामा सहअभियुक्तको पोल गरेको आधारमा मात्र बरामदित लागु औषध खैरो हिरोइन यिनै प्रतिवादीले बिक्री गरेको भन्नु न्यायोचित नदेखिने।

प्रतिवादी राममणि थापा अदालतमा कसुरमा इन्कार छन् । अन्य प्रतिवादीहरू दिपेस लामा तामाङ र रंजित आले मगरले अदालतको बयानमा निजलाई पोल गरेको अवस्था पनि छैन । अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष साबित भएको मात्र आधारले प्रतिवादीलाई कसुरदार कायम गर्न मिल्दैन । लागु औषध बिक्री वितरण गरेको प्रमाण ढक तराजु नगद बरामद भएको अवस्था पनि छैन । प्रहरी हिरासतमा राखी गराएको बयान अन्य स्वतन्त्र प्रमाणले पुष्टि समर्थन नगरेको अवस्थामा त्यस्तो बयानलाई स्वतन्त्र प्रमाण मान्न मिल्दैन। उनाउ व्यक्तिको साथबाट लागु औषध खैरो हिरोइन बरामद हुँदैमा यी पुनरावेदक प्रतिवादीको विरूद्धमा बरामदी मुचुल्का प्रमाण लाग्न सक्तैन । पुनरावेदकसँग लागु औषध खैरो हिरोइन बिक्री वितरण गरेको चिज वस्तु बरामद भएकोसमेत नदेखिने।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । तर बरामद भएको १ ग्राम लागु औषध खैरो हिरोइन हेटौंडा उपमहानगरपालिका वडा नं. १७ बस्ने यिनै प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापा मगरले दिपेस लामा तामाङलाई बिक्री गरेको हुन् भन्ने तथ्ययुक्त प्रमाण दाखिल गरी वादी पक्षले अभियोग दाबी पुष्टि गर्न सकेको देखिन आउँदैन । यस्तो अवस्थामा अनुसन्धानको सन्दर्भमा भएको बयानकै मात्र आधारमा लागु औषध खैरो हिरोइन बिक्री गरेको भनी भन्न सकिने अवस्था नदेखिने।

तथ्य र कानूनी व्यवस्थासमेतका आधारमा प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगर अदालतसमक्ष आरोपित कसुरमा इन्कार रहेका, निजबाट अपराधसँग प्रमाण लाग्ने चिज वस्तु बरामद हुन नसकेको, केवल दिपेस लामासमेतका सहप्रतिवादीले राममणि थापाबाट खरिद गरेको हो भनी अनुसन्धानमा पोल गर्दैमा अनुसन्धानमा भएको सहअभियुक्तको पोल अन्य स्वतन्त्र प्रमाणले पुष्टि नभएको अवस्थामा दिपेस लामा तामाङ, रंजित आले मगर र जोसुवा भोलनबाट बरामद भएको लागु औषध खैरो हिरोइन यी प्रतिवादीले नै बिक्री गरेका

हुन् भन्ने ठोस प्रमाण नहुँदा निज प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापा मगरलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासको फैसलालाई अन्यथा मान्न मिलेन । अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरलाई अभियोग दाबीबमोजिम पाँच (५) वर्ष कैद र रू. दश हजार (१०,०००।-) जरिवानासमेत हुने गरी सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।०९।२० मा भएको फैसला उल्टी भई प्रतिवादी शिव भन्ने राममणि थापामगरले सफाइ पाउने गरी उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७५।०३।२६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राजकुमार दाहाल

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल जेठ २७ गते रोज ३ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०७५-CR-१९८४, लागु औषध, नेपाल सरकार वि. ओमबहादुर सोमै*

प्रतिवादी ओमबहादुर सोमैको साथबाट २ ग्राम ३० मि.ग्रा. लागु औषध ब्राउन सुगर र NITROSUN 10 नामक ट्याब्लेटसमेत बरामद भएको र बरामदित वस्तुमा लागु औषध पाइएको भन्ने केन्द्रीय प्रहरी विधि विज्ञान प्रयोगशाला काठमाडौंको परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिएकोले बरामदित वस्तु लागु औषध भएको तथ्यमा विवाद रहेन । अनुसन्धान अधिकारी तथा अदालतसमक्षका दुवै बयानहरूमा आफू विशुद्ध लागु औषध सेवनकर्ता मात्र रहेको र बरामद भएको २ ग्राम ३० मिलिग्राम ब्राउन सुगर र ९ वटा NITROSUN 10 ट्याब्लेटसमेत केवल सेवन गर्ने उद्देश्य र प्रयोजनका लागि साथमा राखेको हो । उक्त लागु औषध मैले खरिद, बिक्री वितरण तथा ओसार पसार गर्ने उद्देश्यले नभई आफैँले सेवन गर्ने भनी सुनौलीमा गएर खरिद गरेको हुँ भनी लागु औषध आफ्नो साथबाट बरामद भएको तथ्यमा साबित रही अनुसन्धान तथा अदालतमा समेत बयान गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीको साथबाट डढेको नोट बरामद भएको र निजका साक्षी रमेश रानाले प्रतिवादी सेवनकर्ता हुन् भनी बकपत्र गरी प्रतिवादीको बयान बेहोरालाई पुष्टि गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीको साथबाट बरामद भएको हिरोइन २ ग्राम ३० मिलिग्राम र ९ वटा NITROSUN 10 ट्याब्लेट रहेको देखिँदा उक्त परिमाणलाई परिमाणका हिसाबले पनि ठुलो परिमाण मान्न सकिन्न । निजले लागु औषधको कारोबार गर्दागर्दै पक्राउ परेको तथा निजले कारोबार गरेको भन्ने तथ्य पुष्टि भएको पनि देखिएन । यसबाट प्रतिवादी लागु औषधको कारोबार गर्ने नभएर सेवन गर्ने व्यक्ति हुन भन्ने पुष्टि हुन् आएको देखिँदा पुनरावेदन जिकिर तथ्यसङ्गत नदेखिने ।

प्रतिवादी लागु औषधको कारोबार गर्ने नभएर सेवन गर्ने व्यक्ति हुन भन्ने पुष्टि हुन आएकोले निजलाई के कस्तो सजाय हुन्छ भन्ने सम्बन्धमा भएको कानूनी व्यवस्था हेर्दा, लागु औषध

(नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४ (१)(ङ) मा "अफिम, कोका वा सोबाट बनेको लागु औषधको सेवन गर्ने व्यक्तिलाई एक वर्षसम्म कैद वा दश हजार रूपैयाँसम्म जरिवाना" हुन्छ भन्ने व्यवस्था रहेको र निजले हिरोइन र NITROSUN 10 सेवनको लागि ल्याएको हुँदा निजलाई सोही दफा मुताबिक सजाय हुने देखिने।

प्रतिवादीले आफूसित बरामद भएको लागु औषध कारोबार गरेको नभई सेवन प्रयोजनका लागि राखेको भन्ने भनाइ प्रतिवादीको साथबाट डढेको नोट बरामद भएको र निजका साक्षी रमेश रानाले प्रतिवादी सेवनकर्ता हुन् भनी बकपत्र गरेकोबाट समेत समर्थित भई राखेको देखिन्छ। लागु औषधको परिमाण न्यून रहेको र कारोबार गर्दागर्दै पक्राउ परेको तथा निजले कारोबार गरेको भन्ने तथ्य पुष्टि नभएको अवस्थामा प्रतिवादीलाई लागु औषध सेवन गरेतर्फ सजाय हुने गरी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट भएको फैसलालाई अन्यथा मान्न मिलेन । अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, प्रतिवादी ओमबहादुर सोमैलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४ को उपदफा (१) को खण्ड छ (१) बमोजिम पाँच (५) वर्ष कैद र रू. पाँच हजार (५०००) जरिवानासमेत हुने गरी सुरू पाल्पा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०२।०७ मा भएको फैसला केही उल्टी भई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ङ) बमोजिम १(एक) वर्ष कैद सजाय हुने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासबाट मिति २०७५।०९।०३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : राजकुमार दाहाल

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल जेठ २७ गते रोज ३ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** ०७२-CI-१२००, लिखत दर्ता बदर दर्ता, नरेन्द्रकुमार सेन्दाङसमेत वि. मधुकला लिम्बू सेन्दाङ

विवादित जग्गा वादी मधुकला लिम्बू र प्रतिवादी नरेन्द्र सेन्दाङले निजहरू हङकङमा काम गरी कमाएको पैसाले संयुक्त रूपमा खरिद गरेको हुनाले सो जग्गाहरूमा दुवैको बराबर हक रहेको देखिन्छ । दुवै पक्षको समान हक रहेको जग्गा बिक्री गर्दा प्रतिवादी नरेन्द्र सेन्दाङले लेनदेन व्यवहारको १० नं. बमोजिम वादी मधुकलालाई साक्षी राखेको वा निजको मन्जुरी लिएको देखिँदैन । प्रतिवादी नरेन्द्र सेन्दाङले सगोलको व्यवहार मिलाउन र ऋण तिर्नको लागि दाबीको जग्गा बिक्री गरेको भन्ने प्रतिउत्तर जिकिर लिएको भए तापनि के कुन ऋण तिर्नको लागि बिक्री गरेको हो भन्ने कुराको समेत लिखत प्रमाण पेस गरेर प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिएको हुँदा वादी मधुकला लिम्बूको हकमा लिखत बदर भई निजको नाउँमा दर्ता कायम हुने ठहर गरेको सुरू फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट भएको फैसला मिलेको देखिने।

कुनै पनि नाबालकले आफ्नो हकको लागि आफैँ अदालत प्रवेश गर्नुपर्छ भन्ने परिकल्पना

कानूनले गरेको हुँदैन र नाबालक हुँदैमा उसले सम्पत्तिप्रतिको आफ्नो जन्मसिद्ध अधिकार गुमाउने भन्ने पनि हुँदैन। अभिभावकले आफ्नो ऋण तिर्नको लागि भनी आफूखुसी ऋण लिएको भन्ने स्रोतसमेत नखुलाई र आफ्नो धर्मपत्नीलाई समेत कुनै थाहा जानकारी नदिई आफूखुसी गरिदिएको राजीनामाले नाबालकको सम्पत्तिप्रतिको अधिकार गुम्न सक्ने हुँदा निज रिचर्ड सेन्दाङले पनि ३ भागको १ भाग सम्पत्ति पाउनेमा कुनै विवाद नरहने।

तसर्थ, उपर्युक्त विवेचित आधार, कारणबाट पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट सुरु मोरङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला उल्टी हुने गरी वादी दाबीबमोजिम ३ भागको २ भाग लिखत बदर भई सोहीअनुसार वादीहरूको नाउँमा दर्ता कायम हुने ठहऱ्याई मिति २०७२।१।८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः इशा सुवेदी

कम्प्युटर : अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७५ साल असोज ९ गते रोज ३ शुभम्।

९

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०६७-CI-०९८५, घर टहरा भत्काई खिचोला मेटाई हक कायम, रूपा सिजापति खड्कासमेत वि. तेजप्रसाद तिमल्सीना*

विवादित कि. नं. १२९४ को ०-६-०-० जग्गा वादीका नाममा दर्ता रहेको भन्ने कुरा र उक्त जग्गामा प्रतिवादी रूपा सिजापति खड्काले घर बनाएको भन्ने कुरामा वादी प्रतिवादीको मुखमिली विवाद रहेको देखिँदैन। विवादित जग्गा पुनरावेदकहरूको सासू तथा आमा नानी मैयाले यी वादीको दाताका पालादेखि जोत कमोद गरी भोग चलन गरी आएको, सो जग्गामा मिति २०५९।३।१ भन्दा अगाडि घर निर्माण सम्पन्न गरी उल्लिखित मितिमा सो घरमा बसोबास गरी आएको भन्ने कुराको जिकिर लिई प्रतिउत्तरसाथ जग्गाधनीलाई बाली बुझाएको भरपाई र इमाडोल गा.वि.स.को मिति २०५९।३।१३ च.नं. ६५६ को पत्र प्रमाणको रूपमा पेस गरेको देखिन्छ। प्रतिवादीहरूले बाली बुझाएको भरपाई र सो जग्गामा २०५९ सालमा नै घर बनाएको तथ्य स्थापित गरी आफूहरू सो जग्गाको मोही हो भन्ने कुरा स्थापित गर्न खोजे तापनि निजहरूले सो विवादित जग्गाको मोही नै हो भन्ने कुराको ठोस प्रमाण पेस गर्न सकेको पाइँदैन। कुत बुझाएको भन्ने भरपाईको आधारमा मात्र निज मोही रही जग्गा भोगचलन गरी आएको भन्ने कुरा कानूनसम्मत नदेखिने।

मिति २०५९।३।१ अगावै विवादित जग्गामा घर निर्माण कार्य सम्पन्न गरेको भनी पुनरावेदकले प्रतिउत्तरसाथ प्रमाणको रूपमा पेस गरेको इमाडोल गा.वि.स.को मिति २०५९।३।१३ को पत्रको हकमा विचार गर्दा, वादीले विवादित जग्गा दिर्घदास श्रेष्ठबाट मिति २०६१।४।३२ को पारित राजीनामाबाट प्राप्त गरेको लिखतमा कि. नं. १२९४ को जग्गामा हालको मितिसम्ममा घर र बाटो छैन भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ। सो रजिस्ट्रेसन पारित गर्दा राजस्व यकिन गर्ने प्रयोजनार्थ मालपोत कार्यालयले घर र बाटो यकिन गरी मात्र रजिस्ट्रेसन पारित गर्ने गरेको पाइन्छ। यी पुनरावेदक प्रतिवादीले वादीले रजिस्ट्रेसन पारित गरी लिएको मितिपूर्व नै अर्थात् मिति २०५९।३।१ मा सो विवादित जग्गामा

घर बनाएको जिकिर लिई इमाडोल गा.वि.स.को मिति २०५९।३।१३ को पत्र पेस गरेको पाइन्छ। प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६ (ङ) मा **"अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म कुनै अदालत वा सरकारी कार्यालय वा अधिकारीबाट वा नेपाल कानूनबमोजिम अधिकारप्राप्त कुनै व्यक्तिबाट प्रकाशित भएको, तयार गरिएको वा प्रमाणित गरिएको भनी जनिएको लिखत सो अदालत, कार्यालय, अधिकारी वा व्यक्तिबाट प्रकाशित भएको वा तयार वा प्रमाणित गरिएको हो भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ"** भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोमा वादीले जग्गा खरिद गर्दा पारित भएको राजीनामा लिखतमा कि. नं. १२९४ को जग्गामा हालको मितिसम्ममा घर र बाटो छैन भन्ने बेहोरा आधिकारिक हो या प्रतिवादीले प्रतिउत्तर जिकिर लिएको मिति २०५९।३।१ अगावै सो विवादित जग्गामा घर बनेको भन्ने बेहोरा आधिकारिक हो भन्ने कुराको यकिन हुनुपर्ने देखिन्छ, किनकि यी दुवै कुरा एकै साथ सत्य हुन सक्ने विषय होइनन्। यसमा या त राजीनामाको बेहोरा या सिफारिसको बेहोरा मात्र साँचो हुनुपर्ने हुन्छ। यस विरोधाभाषपूर्ण कुरालाई परीक्षण गर्ने क्रममा सुरू जिल्ला अदालतले राजीनामा लिखतको प्रमाणित प्रतिलिपि र प्रतिवादीले घरटहरा निर्माण गरेको बेहोरा प्रमाणित गर्नको लागि पुनरावेदकले दिएको सक्कल निवेदनसहितको फायल र सो समयको चलानी किताब पनि गा.वि.स.को कार्यालयबाट मगाएकोमा राजीनामाको लिखतमा प्रस्ट रूपमा विवादित जग्गामा घर बाटो नभएको भन्ने उल्लेख भएको पाइयो भने सुरू जिल्ला अदालतबाट माग भएका कागजातहरू इमाडोल गा.वि.स. कार्यालयबाट उपलब्ध गराउन नसक्ने भनी सो कार्यालयको मिति २०६४।३।३२ च.नं.२४८० को पत्रबाट लेखी आएको देखिन्छ। त्यसैगरी प्रतिवादीबाट प्रतिउत्तरसाथ पेस भएको मिति २०५९।३।१३ को पत्र इमाडोल गा.वि.स. कार्यालयबाट उपलब्ध भएको २०५९ को सक्कल चलानी किताबसँग मेल खाएको पनि देखिएन। यस अवस्थामा प्रतिवादीबाट प्रतिउत्तरसाथ पेस भएको मिति २०५९।३।१३ को पत्र प्रमाणयोग्य नदेखिने।

पुनरावेदकले वादीको फिराद हदम्यादभित्र नभएकोले वादी दाबी खारेज हुनुपर्ने भनी लिएका जिकिरको हकमा विचार गर्दा, घर बनाउनेको ११ नं. मा **"जग्गा मिची घर बनाएकोमा घर तयार भएको मितिले एक वर्षभित्र नालिस नदिए लाग्न सक्तैन"** भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको परिप्रेक्ष्यमा यी पुनरावेदकहरूले प्रतिउत्तर जिकिर लिएबमोजिम निजहरूले सो विवादित जग्गामा घर बनाएको भन्ने तथ्य माथि विवेचित आधारहरूबाट समर्थित हुन आएको देखिँदैन। बरू प्रत्यर्थी वादीले मिति २०६१।४।३२ मा विवादित जग्गा खरिद गरेको भन्ने कुरा राजीनामा लिखतबाट देखिन्छ। उक्त विवादित जग्गामा यी पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले घर बनाएको भन्ने जानकारी वादीले मिति २०६२।६।२ मा पाएको भनी उल्लेख गरी मिति २०६२।७।३ मा फिराद दायर गरेको देखिँदा वादीको फिराद हदम्यादभित्रै दायर भएको देखियो। यस अवस्थामा सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतबाट वादी दाबीबमोजिम घर भत्काई खिचोला मेटाई जग्गा खाली गराई

चलनसमेत चलाइपाउने र प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जग्गा मिच्नेको महलको १४ नं. बमोजिम रू.४,७७५।- जरिवाना हुने गरी फैसला भएको देखिन्छ । सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतले अर्काको जग्गालाई कब्जा गरी घर बनाएको भनी निज प्रतिवादीहरूलाई जग्गा मिच्नेको महलको १४ नं. बमोजिम बिगोको सयकडा अढाईका दरले रू. ४,७७५।- जरिवाना हुने ठहराएकोमा कोर्ट फी ऐन, २०१७ को दफा ९ मा **"यस ऐनबमोजिम कोर्ट फी लाग्ने मुद्दामा दफा १० ले छुट्न नसक्ने सजायबाहेक प्रचलित अरू कानूनले हुने सजाय गरिने छैन"** भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेबमोजिम प्रस्तुत मुद्दा कोर्ट फी लाग्ने मुद्दा भई सोही ऐनको दफा १० अन्तर्गत पर्ने विषय समावेश भएकोसमेत नदेखिँदा यी पुनरावदेक प्रतिवादीहरूलाई जरिवाना गरेको मिलेको नदेखिएबाट यी प्रतिवादीहरूलाई जरिवाना गरेको हदसम्म जिल्ला अदालतले गरेको फैसलालाई केही उल्टी गरी अरूमा सुरू जिल्ला अदालतको फैसला नै सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसलालाई मिसिल प्रमाणको मूल्याङ्कनको रोहमा अन्यथा भन्न मिल्ने देखिएन। पुनरावेदन जिकिरबमोजिम गरिपाउँ भन्ने बेहोराको प्रतिवादी शम्भुबहादुर खड्कासमेतको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अत: उल्लिखित आधार, कारणहरूबाट ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०६४।९।११ मा भएको फैसला प्रतिवादीहरूलाई जरिवाना गरेको हदसम्म केही उल्टी गरी विवादित कि.नं.१२९४ को जग्गामा वादी तेजप्रसाद तिमिल्सिनाको फिराद दाबीबमोजिम घर भत्काई खिचोला मेटाई जग्गा खाली गराई चलनसमेत चलाई पाउने ठहराएको सुरू जिल्ला अदालतको फैसलालाई नै सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६६।१०।२७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- नवराज जोशी

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इतिसंवत् २०७६ साल फाल्गुण १९ गते रोज २ शुभम्।

१०

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७३-CR-०६०३, ०७४-CR-१५७३, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, राजेश भन्ने टौबहादुर खड्का वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कमला खड्कासमेत*

प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले जाहेरवालीसमेतलाई नेपालबाट भारतको नागाल्याण्डसम्म पऱ्याएको तथ्यमा कुनै विवाद देखिएको छैन। प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्का आरोपित कसुरमा इन्कार रहे पनि जाहेरवालाले त्यसरी अनावश्यक रूपमा निजलाई दोष लगाउनुपर्ने गम्भीर र ठोस कारण तथा प्रमाण प्रतिवादीले गुजार्न सकेको पनि देखिँदैन । प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले जाहेरवालीसमेतलाई नेपालबाट विदेश भारतको नागाल्याण्डसम्म पुऱ्याएको भन्ने तथ्यमा विवाद नभए तापनि निजले जाहेरवालीसमेतलाई बेचेको भन्ने तथ्य पुष्टि हुने वस्तुनिष्ठ प्रमाण वादी पक्षबाट पेस गर्न सकेको मिसिलबाट देखिँदैन । पीडित जाहेरवाली प्रतिवादीको भारत नागाल्याण्ड स्थित घरबाट निस्किएपछि प्रतिवादीकै मालिक

खेतो भन्ने व्यक्तिको घरमा गई बसेको देखिए पनि जाहेरवालीलाई यी प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले आफ्नो मालिकको घरबाट आफ्नो घरमा फिर्ता ल्याउन कुनै पहल गरेको नदेखिएको अवस्थामा पीडित जाहेरवालीलाई आफ्नो मालिक खेतोको घरमा बस्नुपर्ने अवस्था सिर्जना गरेको मान्नुपर्ने देखिन आउँछ । यस स्थितिमा पीडित जाहेरवाली प्रतिवादीको भारत नागाल्याण्ड स्थित घरबाट निस्किएपछि प्रतिवादीकै मालिक खेतो भन्ने व्यक्तिको घरमा बसेकी र खेतोका बाबु छोराले शोषण गर्ने गरेको भन्ने पीडा भोग्ने पीडित जाहेरवालीले अदालतमा आई आफूले भोगेका पीडितहरू बताइरहेको हुँदा ती भोगाइ तथा अभिव्यक्तिहरू प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्ने देखिँदा प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले पीडित जाहेरवालीलाई बिक्री वितरण गर्ने एवम् वेश्यावृत्तिमा लगाउने प्रयोजनको लागि नेपालको भक्तपुरदेखि विदेश भारतको नागाल्याण्डसम्म पुऱ्याएको नभई शोषण गर्ने गराउने उद्देश्यले लगेको भन्ने तथ्य जाहेरी दरखास्त, पीडितको प्रमाणित बयान, प्रतिवादीको बयान, पीडित जाहेरवाली एवम् बुझिएका मानिससमेतले गरेको कागज एवम् बपकत्रसमेतका प्रत्यक्ष एवम् परिस्थितिजन्य प्रमाणबाट स्थापित भएको देखिने ।

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(ख) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, *वेश्यावृत्तिमा लगाउने वा शोषण गर्ने उद्देश्यले कुनै प्रकारले ललाई फकाई, प्रलोभनमा पारी, झुक्याई, जालसाज गरी, प्रपञ्च मिलाई, जबरजस्ती गरी, करकापमा पारी, अपहरण गरी, शरीर बन्धक राखी, नाजुक स्थितिको फाइदा लिई, बेहोस पारी, पद वा शक्तिको दुरूपयोग गरी, अभिभावक वा संरक्षकलाई प्रलोभनमा पारी, डर, त्रास, धाक, धम्की दिई वा करकापमा पारी कसैलाई बसिरहेको घर, स्थान वा व्यक्तिबाट छुटाई लग्ने वा आफूसँग राख्ने वा आफ्नो नियन्त्रणमा लिने वा कुनै स्थानमा राख्ने वा नेपालभित्रको एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा वा विदेशमा लैजाने वा अरू कसैलाई दिने कार्य गरेमा मानव ओसारपसार गरेको मानिने* छ भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ । सोअनुसार यी प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले पीडित जाहेरवालीलाई बेचबिखन गर्ने उद्देश्यले नेपालको भक्तपुरदेखि विदेश भारतको नागाल्याण्डमा पुऱ्याएको नभई शोषण गर्ने गराउने उद्देश्यले लगेको भन्ने देखिन्छ । जुन कुरालाई उक्त दफा ४(२)(ख) ले कसुर मानेको देखिँदा यी प्रतिवादी टौबहादुर खड्काको हकमा उक्त कानूनी व्यवस्था आकर्षित हुने देखिने ।

प्रतिवादी कमला खड्काको हकमा अभियोग दाबीअनुसारको कसुरमा संलग्न रहेको भन्ने पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, मलाई काममा लगाइदिने बाहाना गरी नेपालबाट भारतको नागाल्याण्ड लगी बेचबिखन गर्ने कार्यमा प्रतिवादी कमला खड्काको पनि संलग्नता रहेको भन्ने जाहेरीबाट देखिए पनि जाहेरवालीको प्रमाणित बयानमा निज प्रतिवादीले कसुर गरेको भनी ठोस रूपमा भन्न सकेको देखिँदैन । प्रतिवादी कमला खड्काले अदालतमा उपस्थित भई बयान गर्दा, जाहेरवाली र निजको छोरालाई मेरो श्रीमान्ले नेपालबाट भारतको नागाल्याण्ड

स्थित हाम्रो घरमा लिएर जानुभएकोमा निजहरू दुई महिनाजति हामीसँगै बसी त्यसपछि घर छाडी हाम्रो मालिक खेतोको घरमा गई बसेकामा त्यहाँबाट पनि नेपाल जान्छु भनेकोले दानबहादुर खड्काको जिम्मा लगाएर नेपाल पठाएको हो । हामीले जाहेरवालीलाई बेचेको होइन भनी कसुरमा इन्कार रहेको देखिन्छ । जाहेरवालीसमेतलाई नेपालबाट भारतको नागाल्याण्डसम्म पुऱ्याउने कार्यमा यी प्रतिवादी कमला खड्काको संलग्नता रहेको भनी जाहेरवालीले अदालतमा आई गरेको बकपत्रमा खुलाएको देखिँदैन । मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणबाट समेत यी प्रतिवादी कमला खड्काले जाहेरवालीसमेतलाई नेपालबाट भारतको नागाल्याण्डसम्म पुऱ्याएको भन्ने पनि देखिएको छैन । जाहेरवाली भारतको नागाल्याण्ड पुगी प्रतिवादीको घरमा रहे बसेको अवस्थामा प्रतिवादी कमला खड्कासमेतले जाहेरवालीउपर नराम्रो व्यवहार गरेको भन्ने जाहेरवालीको भनाइरहेको भए पनि जाहेरवालीलाई बेच्ने वा वेश्यावृत्तिमा लगाउने उद्देश्य राखेको भन्नेसम्मको प्रत्यक्ष र विश्वसनीय प्रमाण मिसिलबाट देखिएको छैन । सहप्रतिवादी टौबहादुर खड्काको श्रीमती रहेको आधारमा र २/३ महिना एकैसाथ रहँदा बस्दा चित्त नबुझ्ने व्यवहार भएको भन्दैमा प्रतिवादी कमला खड्काउपर समेत जाहेरी दिएको देखिए पनि यी प्रतिवादी कमला खड्काको हकमा सो जाहेरी वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको नदेखिएको अवस्थामा निज प्रतिवादी कमला खड्कालाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार ठहर गर्नु न्यायोचित हुने नदेखिने।

प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले जाहेरवालीलाई बिक्री वितरण गर्ने एवम् वेश्यावृत्तिमा लगाउने प्रयोजनको लागि नेपालको भक्तपुरदेखि विदेश भारतको नागाल्याण्डसम्म पुऱ्याएको नभई शोषण गर्ने गराउने उद्देश्यले लगेको भन्ने तथ्य जाहेरी दरखास्त, पीडितको प्रमाणित बयान, प्रतिवादीको बयान, पीडित जाहेरवाला एवम् बुझिएका मानिससमेतले गरेको कागज एवम् बकपत्रसमेतबाट स्थापित भएको देखिएको र सो कार्यमा सहप्रतिवादी कमला खड्काको कुनै संलग्नता भएको भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाण नदेखिँदा निज प्रतिवादी टौबहादुर खड्कालाई मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३ र ४(२)(ख) अनुसारको कसुर कायम गरी ऐ.को दफा १५(१)(ङ)(१) बमोजिम सजाय हुने साथै ऐ.दफा १७(१) अनुसार पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराइदिने र प्रतिवादी कमला खड्काले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७२।११।२ मा भएको फैसलामा प्रतिवादी कमला खड्काले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी भएको हदसम्म उक्त फैसला मनासिब देखियो । तर प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्कालाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३ र ४(२)(ख) अनुसारको कसुर कायम गरी ऐ.ऐनको दफा १५(१)(ङ)(१) बमोजिम सजाय हुने र ऐ.दफा १७(१) अनुसार पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी भएको हदसम्म उक्त फैसला मिलेको

नदेखिने।

अत: विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट यी प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्काले जाहेरवालीलाई बिक्री वितरण गर्ने एवम् वेश्यावृत्तिमा लगाउने प्रयोजनको लागि नेपालको भक्तपुरदेखि विदेश भारतको नागाल्याण्डसम्म पुर्‍याएको नभई शोषण गर्ने गराउने उद्देश्यले लगेको भन्ने देखिरहेको अवस्थामा निज प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्कालाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३ र ४(२)(ख) को कसुर कायम गरी ऐ.ऐनको दफा १५(१)(ङ)(१) बमोजिम दश वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना हुने र ऐ.दफा १७(१) अनुसार जरिवानाको ५०% ले पचास हजार रूपैयाँ क्षतिपूर्तिबापत जाहेरवालीलाई भराइदिने र प्रतिवादी कमला खड्काले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७२।११।२ मा भएको फैसलामा प्रतिवादी कमला खड्काले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी भएको हदसम्म उक्त फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने र प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्कालाई मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३ र ४(२)(ख) को कसुर कायम गरी ऐ.ऐनको दफा १५(१)(ङ)(१) बमोजिम सजाय हुने र ऐ.दफा १७(१) अनुसार पीडितलाई क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी भएको हदसम्म उक्त फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई निज प्रतिवादी राजेश भन्ने टौबहादुर खड्कालाई ऐ.ऐनको दफा ४(२)(ख) को कसुर कायम भई ऐ.ऐनको दफा १५ को (१)(च) बमोजिम पाँच वर्ष कैद सजाय हुने।

इजलास अधिकृत : रामचन्द्र खड्का

इति संवत् २०७७ साल असार २२ गते रोज ३ शुभम्।

## इजलास नं.२

### १

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०७३-WO-११३८, उत्प्रेषण, मिनबहादुर सिवाकोटी वि. स्वास्थ्य तथा जनसङ्ख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत

निवेदकले स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५ को नियम ३१क बमोजिमको समय तालिका र अवधिको विपरीत हुने गरी गरिएको सरूवा बदर गरिपाउन माग दाबी लिएको देखिन्छ । दमक अस्पतालबाट सतासीधाम स्वास्थ्य चौकीमा न्यूनतम अवधि पूरा भएपछि मात्र निवेदकको सरूवा भएको तथ्य स्थापित देखिन्छ।

वस्तुतः सरूवा कर्मचारीको अधिकार नभई सुविधासम्मको विषय हो । तसर्थ कुनै पनि कर्मचारीको सरूवा गर्दा प्रचलित कानूनको प्रतिकूल नहुने गरी कर्मचारीको सुविधा र संस्थाको आवश्यकता र औचित्यतालाई मध्यनजर गरी सरूवा हुनु र गरिनु पर्दछ । लामो अवधि एउटै अस्पतालमा कार्यरत निवेदकलाई दरबन्दी मिलानको सिलसिलामा सोही जिल्लाभित्रकै स्वास्थ्य चौकीमा सरूवा गरिएको र दरबन्दी मिलान गर्ने जिम्मेवारी विपक्षीहरूको रहे भएको

हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतः आनन्दराज पन्त

कम्प्युटरः प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २ गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** ०७२-CI-०४७२, अंशबन्डा, मनोहर थापा वि. कान्छी थापासमेत

वादीहरूले कि.नं.९०, ९२ र ११९ को जग्गा निजहरूको पति धनबहादुरको नाउँमा दर्ता नै नभएको वा सो जग्गा आफूहरूले भोग चलन नगरेको भन्न सकेको देखिँदैन । प्रस्तुत मुद्दामा अंशको तायदाती फाँटवारी पेस गर्दासमेत उल्लिखित जग्गाहरूको फाँटवारी पेस हुन आएको देखिँदैन । वादीहरूले उल्लिखित जग्गासमेत सगोलबाटै भोग चलन गरेको भन्ने उल्लेख गर्न नसकेकोले वादीका पति तथा प्रतिवादीका बाबुसमेत जग्गा नापी हुनुपूर्व नै अलग अलग भई नापीमा छुट्टाछुट्टै जग्गा नापी दर्ता गराएको देखिएकोले यी वादी प्रतिवादीहरू सगोलको अंशियार रहेको देखिन नआउने।

प्रतिवादी मनोहर थापाको नाम दर्ताको जग्गा निजले २०६५ सालमा खरिद गरी लिएको देखिएकोले सो जग्गा बन्डा लाग्ने सगोलको जग्गा देखिन नआउने।

दर्तावाला कृष्णकुमारीसमेत वादीका पति धनबहादुर र प्रतिवादीका बाबु ज्ञानबहादुरसँग अंश लिई भिन्न भएको तथ्य प्रतिवादीले स्वीकार गरेको देखिन्छ । निज दर्तावाला कृष्णकुमारीको मृत्यु भइसकेको अवस्था छ। निज कृष्णकुमारीका हक खाने हकदार यिनै वादी प्रतिवादीहरू रहेको देखिएकाले निज स्वर्गीय कृष्णकुमारीको नामदर्ताको उल्लिखित जग्गाहरू र दर्ता नभएको जग्गा वादी प्रतिवादीको हक पुगी दर्ता हुने भएमा त्यस्तो जग्गासम्म वादीहरूले आधा र प्रतिवादीले आधा बन्डा छुट्याई लिन पाउने।

तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख भएको सम्पूर्ण घर जग्गा बन्डा गर्ने गरेको सुरू ललितपुर जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला सो हदसम्म नमिलेकोले केही उल्टी हुने।

इजलास अधिकृत: जयराम श्रेष्ठ

कम्प्युटर : देवीमाया खतिवडा (देविना)

इति संवत् २०७४ साल माघ २१ गते रोज १ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** ०७१-CI-१०१३, अंश चलन, कविता गौतम वि. रम्भा गौतम पोखरेल

वादी रम्भा गौतम र कविता गौतमको बिचमा सौता सौताको नातासम्म भएको तथ्यमा विवाद नभई एक आपसमा मुखमिलेको अवस्था देखिँदा कविता गौतमले बकसपत्रको माध्यमबाट प्राप्त गरेको सम्पत्तिहरू रम्भा गौतमको हकमा पैतृक ठहरी बन्डा लाग्ने अवस्थाको एकातर्फ देखिँदैन भने अर्कोतर्फ गोमाबाट शेषपछिको बकसपत्रको माध्यमले कविता गौतमले प्राप्त गरेको सम्पत्ति निजले रिझाएबापत पाएको भन्ने देखिँदा अंशबन्डाको १८ नं. मा मानो नछुट्टिई सँग बसेका अंशियार छन् भने जुनसुकै अंशियारले सगोलको सम्पत्तिबाट वा सगोलको खेती, उद्योग, व्यापार

व्यवसायबाट बढे बढाएको सगोलको आर्जन र लेनदेन व्यवहारको महलको ८ नम्बरबमोजिम लगाएको ऋण सबै अंशियारलाई भाग लाग्छ । सोबाहेक कुनै अंशियारले आफ्नो ज्ञान वा सिप वा प्रयासबाट निजी आर्जन गरेको वा कसैबाट निजी तवरले दान वा बकस पाएको वा कसैको अपुताली परेको वा स्त्री अंश धनको महलको ५ नम्बरबमोजिम पाएकोमा त्यस्तो आर्जन वा पाएको सम्पत्ति सो आर्जन गर्ने वा पाउने अंशियारको निजी ठहरी आफूखुशी गर्न पाउँछ । बन्डा गर्न कर लाग्दैन । अंश नभए पनि मानो छुट्टिई भिन्न बसेका वा रजिस्ट्रेसन नगरी खती उपती आफ्नो आफ्नो गरी आफ्नो हिस्सासँग मात्र राखी खानु पिउनु गरेकोमा एकै ठाउँमा भए पनि मानो छुट्टिई भिन्न भएको ठहर्छ । त्यस्तो कमाएको धन लाएको ऋण आफ्नो आफ्नो हुन्छ भन्ने कानूनी प्रावधानबमोजिम शेषपछिको बकसपत्रले प्राप्त गरेको उल्लिखित कि.नं.११, १८, ३२, ४५, ४६, ४७, ४९, ५० र ५२ को जग्गाहरू प्रतिवादी कविता गौतमको निजी हुने र बन्डा गर्न कर नलाग्ने अवस्थाको देखिने ।

कि.नं. १८६ को घर र जग्गा कृषि विकास बैंकले लिलाम गर्दा २०५७।१०।१५ मा कविता गौतमले लिलाम सकार गरिलिएको भन्ने मिसिल संलग्न लिलाम सकार गरेको २०५७।१०।१९ कागजबाट देखिन्छ । अंश मुद्दा मिति २०६४।७।२९ मा दायर भएको देखिन्छ । मिति २०५७।१०।१५ मा लिलाम सकार गरेको देखिन्छ । यसरी अंश मुद्दा चल्नुभन्दा अगावै लिलाम सकार गरिलिएको भन्ने देखिन आएको र त्यसरी लिलाम सकार गरी लिएको सम्पत्तिलाई यकिनन् वस्तुनिष्ट प्रमाणको अभावमा सगोलको मानी बन्डा गर्दा न्यायोचित हुने देखिँदैन । जहाँसम्म निजी आर्जनको सम्पत्तिबाट नै लिलाम सकार गरिएको भन्ने भनाइ हो सो सम्बन्धमा त्यस्तो जिकिर लिनेले आफूले लिएको जिकिर तथ्यसङ्गत वस्तुनिष्ठ प्रमाण प्रस्तुत गरी प्रमाणित गराएको हुनुपर्नेमा त्यस्तो भए गरेको पाइँदैन । अर्कोतर्फ कविता गौतमले निजी आर्जनको कुरालाई पुष्टि गर्ने गरी आफूले सिद्धार्थ बैंक विराटनगर शाखाबाट ८५,००,०००।- लिएको ऋण देखाएको कुरा यहाँनेर सान्दर्भिक देखिई सो कुरालाई न्यायको रोहमा अन्यथा भन्नुपर्ने पनि देखिँदैन । त्यसैले उल्लिखित कि.नं.१८६ को हकमा समेत माथि विवेचित आधार प्रमाण र कारणबाट सो जग्गासमेत बन्डा लाग्ने र लगाउनुपर्ने अवस्थाको नदेखिने ।

कि.नं.१८६ को जग्गा कविता गौतमले लिलाम सकार गरी लिएको भन्ने देखिँदा सोमा बन्डा लगाएको, त्यस्तै कि.नं.११, १८, ३२, ४५, ४६, ४७, ४९, ५० र ५२ को जग्गासमेत शेषपछिको बकसपत्रद्वारा प्राप्त गरेकोले बकसपत्र दिने गोमा गौत्तमको हक १ भाग छुट्याई अरूमा बन्डा लगाउनु पर्नेमा सबैमा बन्डा लगाएको सो हदसम्म पुनरावेदन अदालत विराटनगरको इन्साफ मिलेको नदेखिने ।

अतः ऋणको हकमा साहुको उजुर परेका बखत ठहरेबमोजिम हुने नै हुँदा कि.नं.११, १८, ३२, ४५, ४६, ४७, ४९, ५० र ५२ बाट गोमाले ३ भागमध्ये आफ्नो १ भाग कवितालाई शेषपछिको बकस गरिदिएकोले निजको १ भाग शेषपछिको बकसपाउने कवितातर्फ छुट्याई बाँकीमा ८ खण्डको

१ खण्ड अंश भाग लाग्ने देखियो । कि.नं.१८६ को हकमा कविताले आफ्नो प्रयासबाट लिलाम सकारी लिएको देखिँदा त्यसमा अरू अंशियारको बिच भाग लाग्ने देखिएन । त्यसकारण सोमा समेत अंश भाग लगाई र कि.नं.११, १८, ३२, ४५, ४६, ४७, ४९, ५० र ५२ मा १ भाग नछुट्याई सबैमा अंश भाग लगाउने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०६९।१।१० मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०६९।१।१० मा भएको फैसला सो हदसम्म केही उल्टी हुने ।

इजलास अधिकृत : जयराम श्रेष्ठ

कम्प्युटर : प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७४ साल कार्तिक २९ गते रोज ४ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** ०७०-CI-०२८०, ०२८१, अंश, राजकुमारी गुरूङ वि. सरिता गुरूङ, निरबहादुर गुरूङसमेत वि. सरिता गुरूङ

प्रतिवादीको तर्फबाट वादीहरूले आफ्नो अंश भाग लिई पाइसकेका छन् भन्न नसकी पर्वत जिल्ला मुकदेउराली गा.वि.स.मा रहेको श्रीसम्पत्तिमध्येबाट मात्र अंश पाउने हुन, हालसालै अंश पाउने स्थिति छैन भनी प्रतिउत्तरमा लेखाएको बेहोराले वादीहरूले अंश लिई पाइसकेको भन्ने कुरा देखिन आउँदैन । स्वयं प्रतिवादीहरूले फिरायको प्रतिउत्तर बेहोराबाट नै वादीहरूले अंश पाउने भन्ने कुरा देखिन आएकोले वादी र प्रतिवादीहरूको बिचमा अंशभाग लाग्ने नै देखिने ।

विवाह हुन बाँकी कमल गुरूङ र सिता गुरूङ देखिन आएका र अंशबन्डाको १७ नं को कानूनी व्यवस्थालाई हेर्दा विवाह नभएका छोरा छोरीको विवाह खर्च पर सार्दा विवाह नभएका छोराछोरी धेरै भए पनि थोरै भए पनि जम्मा धन सम्पत्ति ठहरे सयकडा दश, एक हजारदेखि घटी धन सम्पत्ति ठहरे सयकडा बिसका दरले विवाहको खर्च पर सारी जस्तो हिसाबको अंश पाउँछ सोही हिसाबसित दामासाही गरी विवाह खर्च पनि बाँडिदिनुपर्छ लेखिएबमोजिम बन्डा गर्दा विवाह खर्च पाउने एक जवान मात्र र अंश पाउने अंशियार धेरै जवान भई अंशियारले पाउने अंशभन्दा विवाह खर्च धेरै पाउने भएमा अंशियार एकजनाले पाउने अंशको चार खण्डको तीन खण्डसम्म विवाह खर्च पर सार्नु पर्दैन भन्ने व्यवस्था भएको देखिँदा विवाह हुन बाँकी अंशियारको हकमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाले विवाह खर्च छुट्याई दिनुपर्ने नै देखिने ।

तसर्थ, ऋणको हकमा साहुका उजुर परेका बखत ठहरेबमोजिम हुने गरी प्रस्तुत भएको तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख भएको श्रीसम्पत्तिबाट विवाह हुन बाँकी अंशियारको कानूनबमोजिम विवाह खर्च छुट्याई परसारी बाँकी सम्पत्तिलाई ७ भाग लगाई सोमध्ये वादीहरूको पिता पति सुनकाजी गुरूङको भागमा पर्ने १ भागलाई पुन: ३ भाग लगाई वादीहरू सरिता गुरूङ र गौरव गुरूङको आआफ्नो १-१ भाग अंश वादीहरूले प्रतिवादीहरूबाट छुट्याई लिन पाउने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत पोखराको इन्साफ मनासिब देखिने ।

अत: उपर्युक्तानुसार उल्लेख भई विवेचना भएको आधार, प्रमाण र कानूनी व्यवस्थासमेतबाट मिति २०६९।१२।५ मा पुनरावेदन अदालत

पोखराबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : जयराम श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल माघ २१ गते रोज १ शुभम्।

## इजलास नं.३

### १

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७३-RC-०१०३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कुमार सरदार बाँतर*

प्रतिवादी कुमार सरदार बाँतर घटना घटाउँदाको अवस्थामा Mentally illness थिए भन्ने डाक्टरको बकपत्रमा उल्लेख नभएको, अदालतमा बयान गर्दा बेस्सरी ज्वरो आएछ, बहुलाएछु, चक्कु निकालेर काटेर मारेछु भनी कसुर स्वीकार गरी बयान गरेको देखिँदा कसुर गर्दाको अवस्थामा प्रतिवादी Mentally illness नदेखिएको, वस्तुस्थिति मुचुल्का र घटनास्थल मुचुल्काका मानिसले अदालतमा किटानीसाथ प्रतिवादीले नै मारेको भनी बकपत्र गरेकोसमेतबाट अभियोग दाबीको कसुर प्रतिवादीले गरेको तथ्य स्थापित भइरहेको हुँदा प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय गरी ८ (आठ) वर्ष कैदको सजाय गर्ने राय व्यक्त गरी पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट भएको फैसला मनासिब नै देखिएको।

अत: प्रतिवादी कुमार सरदार बाँतरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहऱ्याई सुरू सप्तरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।१।२४ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट मिति २०७२।११।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिए तापनि मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) बमोजिम सर्वस्व हुने गरी सजाय गर्न मिल्ने नदेखिँदा निज प्रतिवादी कुमार सरदार बाँतरलाई जन्मकैदसम्म हुने र प्रतिवादीको साबिती बयान, कसुरको अवस्था तथा अपराध हुँदाको परिस्थितिसमेतलाई विचार गर्दा उक्त सजाय पर्याप्त हुने देखिँदा ८ (आठ) वर्ष कैद हुने रायसहित पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट मिति २०७२।११।११ मा भएको फैसला साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: ध्रुवबहादुर कुँवर

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७६ साल पुस ६ गते रोज १ शुभम्।

### २

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७४-CR-१६५५, अपहरण तथा शरीर बन्धक, नेपाल सरकार वि. प्रविन बोगटी भन्ने टेकबहादुर बोगटीसमेत*

जाहेरवाला तथा डिलबहादुर खत्रीका बिचमा लेनदेन कारोबार रहेको तथ्य स्वयम् जाहेरवालाले स्वीकार गरेको, जाहेरवालाले दाबी लिए जस्तो कुनै कुटपिट भएको भन्ने घाउ जाँच केस फारामबाट नदेखिएको, जाहेरवालालाई जबरजस्ती गरी, बल प्रयोग गरी वा अन्य कुनै किसिमको धम्की, डर, त्रास देखाई गाडीमा

लिएको वा अपहरण गरेको स्थल काठमाडौंको तिलगंगामा जाहेरवालालाई मुलुकी ऐनको अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १ र २ नं. मा परिभाषित कार्य गरी अपहरण तथा शरीर बन्धक गरेको भनी जाहेरवाला तथा वादी पक्षले उल्लेख गर्न नसकेको, प्रतिवादीहरूले ऐ. महलको ३ नं. मा उल्लिखित उद्देश्यका लागि अपहरण गरेका हुन् भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाण वादी पक्षले पुऱ्याउन नसकेको र जाहेरवालाले प्रतिवादी डिलबहादुरलाई दिनुपर्ने रकमको सम्बन्धमा जाहेरवालालाई कागज गराउनुबाहेक प्रतिवादीहरूको निज जाहेरवालालाई अपहरण गरी शरीर बन्धक लिनेतर्फको कुनै मनसाय रहेको मिसिलबाट देखिँदैन । प्रतिवादीहरू मौकामा र अदालतको बयानमा समेत कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको र उक्त इन्कारी बयान प्रतिवादीका साक्षीहरू सुरेन्द्र महर्जन, प्रजापती दाहाल, लेखनाथ दाहालको बकपत्रबाट समेत समर्थित भइरहेको अवस्था छ । मिसिल संलग्न प्रमाण कागजबाट प्रतिवादीहरूले कुनै लाभ प्राप्त गरेको भन्नेसमेत देखिँदैन। यसबाट यी प्रतिवादीसहित भई जाहेरवालाकै गाडी चढी काठमाडौंको तिलगंगाबाट माओवादीको पार्टी कार्यालय कुपण्डोलसम्म गएको काम कुरालाई अपहरण गरेको तथा जाहेरवालालाई प्रतिवादीहरूले बन्धक बनाएको कार्य भनी भन्न मिल्ने नदेखिएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूले अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउने गरी भएको उच्च अदालत पाटनको फैसला मिलेकै देखियो । प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी प्रविन भन्ने टेकबहादुर बोगटी र प्रतिवादी सुवर्ण भन्ने मानबहादुर विष्टले अभियोग मागदाबीबमोजिम कसुर गरेको नदेखिँदा सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको मिति २०७३।०२।२५ को फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरू प्रविन भन्ने टेकबहादुर बोगटी र सुवर्ण भन्ने मानबहादुर विष्टले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर्छ । कसुर गरेको तथ्य स्थापित नभई प्रतिवादीहरूमध्येका टेकबहादुर बोगटी र मानबहादुर विष्टले सफाइ पाउने ठहरी फैसला भएबाट वारदात नै स्थापित नभएको अवस्थामा पुनरावेदन नगर्ने डिलबहादुर खत्रीको हकमा समेत विचार गर्दा वारदात स्थापित नभएको र प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीअनुसार कसुर गरेको कुरा मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट विवादरहित तवरले पुष्टि प्रमाणित भएको नदेखिँदा प्रतिवादी डिलबहादुर खत्रीले समेत मुलुकी ऐन, अ.बं.२०५ नं. बमोजिम आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहर्छ भनी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०७।०६ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मञ्जु शर्मा

कम्प्युटर: हर्क माया राई

इति संवत् २०७७ साल जेठ ७ गते रोज ४ शुभम्।

## इजलास नं.४

### १

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७६-RC-००९७, कर्तव्य*

*ज्यान र ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. कुन्दन भन्ने मनोज तुम्बापो*

प्रस्तुत मद्दामा प्रतिवादीको अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष र अदालतमा समेत भएको साबिती बयान, जाहेरी दरखास्तको बेहोरा, घटना विवरण कागज र सो कागज गर्ने व्यक्तिहरूले अदालतमा उपस्थित भई घटना विवरण कागजको बेहोरालाई समर्थित हुने गरी गरेको बकपत्र, बरामदी मुचुल्कासमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणबाट प्रतिवादी कुन्दन भन्ने मनोज तुम्वापोले आइन्द्रविक्रम ईवा र सावित्रा ईवाले खुकुरी खोस्न खोज्दा निजहरूलाई समेत यत्रतत्र खुकुरी प्रहार गर्दा चोट लागी घाइते भई उपचारपछि निको भएको देखिँदा निजले ज्यान मार्ने उद्योग कसुरसमेत गरेको पुष्टि हुन आएको हुँदा निजै प्रतिवादीले आइन्द्रविक्रम ईवा र सावित्रा ईवालाई खुकुरी प्रहार गरी ज्यान मार्ने उद्योगसमेत गरेको देखिँदा ज्यानसम्बन्धी महलको १५ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद हुने ठहर्छ भन्ने सुरू पाँचथर जिल्ला अदालतको मिति २०७४।१०।२५ को फैसलालाई सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट भएको फैसलासमेत मिलेकै देखिने।

अतः माथि विवेचित आधार, प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी कुन्दन भन्ने मनोज तुम्वापोलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. र १५ नं. बमोजिम सजाय हुने ठहऱ्याई सुरू पाँचथर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।१०।२५ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७६।०३।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिएकोले साधक सदर हुने ठहर्छ। साथै मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) बमोजिम कानूनमा ***"कुनै कसुरबापत सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुर सजाय गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन"*** भन्ने व्यवस्था भएको पाइन्छ। त्यसैगरी फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा ***"कुनै कसुर सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी सजाय निर्धारण गर्नुपर्ने छ"*** भन्ने व्यवस्था भएको पाइन्छ। त्यसैगरी केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(क) मा ***"कुनै कसुरको सजाय साबिक ऐनमा मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएकोभन्दा बढी रहेछ भने संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुने छ"*** भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको परिप्रेक्ष्यमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ मा सर्वस्वसहित जन्मकैदको कानूनी व्यवस्था नभएको र ऐ. को दफा १७७(२) मा ज्यान मार्ने कसुर गर्ने गराउने व्यक्तिलाई जन्मकैदको सजाय मात्र हुने भनी कानूनी व्यवस्था रहेभएको देखिएकोले प्रस्तुत मुद्दामा पनि यी प्रतिवादी कुन्दन भन्ने मनोज तुम्वापोलाई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने।

इजलास अधिकृत : कृष्णप्रसाद अधिकारी
शाखा अधिकृतः योमा मुलपती
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७६ साल पौष १६ गते रोज ४ शुभम्।

**२**

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०७०-WO-०२०६, उत्प्रेषण / परमादेश, नरेश दुगड वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत*

निवेदकले निर्यातमा नगद प्रोत्साहनसम्बन्धी कार्यविधि, २०६८ बमोजिमको सुविधा प्राप्त गर्नुपर्ने भनी जिकिर लिए पनि २०६९ भाद्र मसान्तसम्म वस्तु निर्यात गरी २०६९ कार्तिक मसान्तसम्ममा नगद प्रोत्साहनका लागि उद्योग विभागमा निवेदन गर्नुपर्नेमा उक्त तोकिएको म्यादभित्र निवेदन दर्ता नगरी मिति २०७०।३।१४ मा मात्र निवेदन गरेको देखिन आएको छ। तोकिएको म्यादमा वस्तु निर्यात गरी निवेदन दिएको हकमा निजले नगद प्रोत्साहनसम्बन्धी कार्यविधि, २०६८ बमोजिमको सुविधा पाएकै देखिन्छ । २०६८ सालको कार्यविधिमा उल्लिखित सुविधा माग गर्न २०६९ साल भाद्र मसान्तभित्र वस्तु निर्यात गरी २०६९ कार्तिक मसान्तभित्र निवेदन दिनुपर्ने सर्त छ । यसरी २०६९ साल भाद्र मसान्तभित्र वस्तु निर्यात गरी कार्तिक मसान्तभित्र निवेदन नगर्ने व्यक्तिले त २०६८ को कार्यविधिअन्तर्गत नगद प्रोत्साहन पाउन सकिने नदेखिएपश्चात् सोभन्दा पछि आश्विनदेखि फागुनसम्म निर्यात गरी २०७० सालमा मात्र निवेदन दिने निवेदकको कथनअनुसार व्याख्या गर्नु न्यायिक मूल्य र कानूनी सिद्धान्तअनुकूल हुने देखिँदैन । २०७० को कार्यविधिको दफा १४ को उपदफा (४) बमोजिम **२०६९ भाद्र मसान्तअघि निर्यात गरेका तर निर्यातमा नगद प्रोत्साहनका लागि निवेदन गरिनसकेका निर्यातका हकमा यसै कार्यविधिबमोजिम नगद प्रोत्साहन गरिने छ** भन्ने प्रस्ट व्यवस्था रहेको परिप्रेक्ष्यमा निवेदकको मागबमोजिम २०६९ साल आश्विनदेखि फागुनसम्म निर्यात गरेको वस्तुको हकमा निर्यातमा नगद प्रोत्साहनसम्बन्धी कार्यविधि, २०६८ बमोजिम नगद प्रोत्साहन प्राप्त गर्न सक्ने अवस्था नै नरहने।

यसरी खारेज भएको मुद्दा नं. ०७०-WO-००१४, ०७०-WO-००१३, ०७०-WO-००१२ को उत्प्रेषण परमादेश मुद्दा यसै विषयसँग सम्बन्धित रहेको र यी मुद्दाहरूबाट निर्यातमा नगद प्रोत्साहनसम्बन्धी कार्यविधि, २०७० को दफा १४(३) र (४) को व्यवस्था नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १२(३)(च), १८(१), १९(१) समेतसँग बाझिएको भनी रिट निवेदनको जिकिर रहेकोमा उक्त कार्यविधिको दफा १४(३) र (४) लाई संविधानअनुरूप रहेको भनी विशेष इजलासले व्याख्या गरेको, २०७० को कार्यविधिको दफा १४ को उपदफा (४) ले "२०६९ भाद्र मसान्तअघि निर्यात गरेका तर निर्यातमा नगद प्रोत्साहनका लागि निवेदन गरी नसकेका निर्यातका हकमा यसै कार्यविधिबमोजिम नगद प्रोत्साहन प्रदान गरिने छ" भनी उल्लेख गरेको हुँदा रिट निवेदकको मागबमोजिम निर्यातमा नगद प्रोत्साहनसम्बन्धी कार्यविधि, २०६८ अनुसार नगद प्रोत्साहन दिन नमिल्ने भनी उद्योग विभागबाट भएको निर्णयमा कुनै कानूनी त्रुटि नरहेको।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट उद्योग विभागको मिति २०७०।३।१७ को पत्र कानूनसम्मत नै रहेको

देखिँदा निवेदन मागबमोजिमको उत्प्रेषणयुक्त परमादेशलगायतका आदेश जारी गर्न मिलेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: नवीनकुमार यादव

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७६ साल फागुन १ गते रोज ५ शुभम्।

## इजलास नं.५

१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०७२-CI-०२८२, उत्प्रेषण, खगेन्द्र नवजीवन केन्द्रसमेत वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय, काठमाडौंसमेत

रिट निवेदनको बेहोराबाटै नेपाल सरकारको अनुदानबाट उक्त विद्यालय सञ्चालन भएको भन्ने स्वीकारै गरेको देखिएको छ । विद्यालयले नेपाल सरकारबाट नियमित रूपमा रकम विनियोजन भई अनुदान प्राप्त गरी आएको, शैक्षिक गुठी वा कम्पनीमा कहीँकतै दर्ता नभएको र अन्य सामुदायिक विद्यालय सरल पाठ्य पुस्तकहरू उपलब्ध गराई, सामुदायिक विद्यालयका स्थायी शिक्षकसरह शिक्षकहरूको व्यवस्थापन गरी सोहीअनुरूप विद्यालय सञ्चालन गरी आएको कुरा शिक्षा विभागको मिति २०६६।७।२४ र शिक्षा सेवा आयोगको मिति २०६७।४।१२ को पत्रसमेतबाट प्रस्ट हुँदा यो विद्यालय सामुदायिक विद्यालय भएको प्रस्ट हुने ।

मिति २०६९।७।१७ गते नेपाल अपाङ्ग सङ्घ, खगेन्द्र नवजीवन केन्द्रका अध्यक्ष गजेन्द्रकुमार लामाको अध्यक्षतामा बसेको बैठकले विद्यालय व्यवस्थापन समिति गठन गर्ने प्रक्रिया अघि बढाएअनुसार सो प्रयोजनका लागि मिति २०७०।१।१५ मा विद्यालय निरीक्षक श्री हरिबाबु पोख्रेलको अध्यक्षता तथा विद्यालय स्रोत व्यक्ति श्री यदुनाथ शर्माको उपस्थितिमा सम्पन्न बैठकको निर्णयानुसार मिति २०७०।१।२२ गते अभिभावक तथा संरक्षकहरूको भेलाले विद्यालय व्यवस्थापन समिति गठन भएको देखियो । यसरी विद्यालयलाई सामुदायिक विद्यालयमा दर्ता गर्ने भनी पूर्वव्यवस्थापन समितिबाट निर्णय भई सोहीअनुरूप नेपाल सरकारबाट विद्यालय सञ्चालनका लगि नियमित अनुदान प्रदान गरी आएकोमा शिक्षा ऐन, २०२८ को दफा १२ को खण्ड (क) र (ख) बमोजिम अभिभावकहरूको भेलाद्वारा भएको विद्यालय व्यवस्थापन समितिको गठन तथा सोबमोजिमको कार्य कानूनसम्मत नै देखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारणबाट निवेदन खारेज गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७१।६।१ को आदेश (फैसला) मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पौष २ गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०७१-CI-१४००, परमादेश, जिल्ला प्रहरी कार्यालय रौतहट, गौरसमेत वि. मोहमद मेराज आलम

मुलुकी ऐन, अ.बं. ९० नं. हेर्दा, *नेपाल*

*सरकार वादी हुने मुद्दाको कसैको निवेदनपत्र वा दरखास्त हुलाकद्वारा मुद्दा हेर्ने अड्डामा आयो भने सो निवेदनपत्र वा दरखास्त दिने मानिसलाई तुरून्त बाटाका म्यादबाहेक ७(सात) दिनको म्याद टाँसी झिकाई बुझ्दा निजले सो पठाएको मैले हो साबित गर्न सक्छु भन्यो भने सोही बेहोराको प्रमाण खुलाउनुपर्ने भए खुलाई बयान लिई कानूनबमोजिम रीत पुऱ्याई मात्र बात लागी माग्नेलाई पक्रन र कारबाही गर्न हुन्छ । सो मानिसले मैले पठाएको होइन भन्यो वा बेनामी रहेछ वा टाँसिएको म्यादभित्र कारबाही गराउन आएन भने त्यस्तो कागजले मुद्दा हेरिन वा मानिस पक्राउ र कारबाही हुन सक्दैन* भनी स्पष्ट रूपमा उल्लेख भएको पाइन्छ । जिल्ला प्रहरी कार्यालय, रौतहटमा निवेदकले हुलाकबाट मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार मुद्दाको जाहेरी दरखास्त दिएको देखिने ।

हुलाकमार्फत जाहेरी दरखास्त प्राप्त भएपछि सो जाहेरी दरखास्त सनाखत गर्नेलगायतका कार्यहरू भएको मिसिल संलग्न प्रमाण कागजबाट देखिन आएन । मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार मुद्दा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची १ भित्रको मुद्दा रहेको र त्यस्तो हुलाकबाट जाहेरी दरखास्त दिने व्यक्तिलाई तुरून्त बाटाका म्यादबाहेक ७ दिनको म्याद दिई झिकाई सनाखत गराई आवश्यक प्रक्रिया पूरा गर्नुपर्ने मुलुकी ऐन, अ.बं. ९० नं. मा कानूनी व्यवस्था रहेको छ । निवेदकले दिएको जाहेरी दरखास्त हुलाकमार्फत प्राप्त भएपछि अ.बं. ९० नं. बमोजिम जाहेरवालालाई म्याद जारी गरी झिकाई सनाखत गराई सो जाहेरी दरखास्तउपर आवश्यक कारबाही गरी सो जाहेरी दर्ता हुन सक्ने नसक्ने कुराको निर्क्योल गरी निकासा दिनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा कानूनबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी जाहेरी दरखास्त दर्ता गर्नुपर्ने नपर्ने के हो ? सोको निकासा दिने कानूनी कर्तव्य जिल्ला प्रहरी कार्यालय रौतहटले निर्वाह गरेको नदेखिने ।

अतः पुनरावेदन अदालत हेटौंडाले परमादेशको आदेश जारी गर्ने गरी भएको मिति २०७१।१२।११ को आदेश (फैसला) मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर : विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७४ साल पौष २ गते रोज १ शुभम् ।

## ३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** ०६७-CR-१२५९, ०६७-CR-१२८०, वैदेशिक रोजगार ठगी, नेपाल सरकार वि. बद्री गौडेल, बद्री गौडेल वि. नेपाल सरकार

वस्तुतः मिति २०६३।०५।०२ को लिखत किर्ते भनी प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष कागज गरेको तर ल्याप्चे सहीछाप अनुसन्धानकै क्रममा भिडाई विशेषज्ञबाट जाँच गराइएकोमा मिति २०६७।०५।१४ मा विशेषज्ञको रायबाट भिडेको भन्ने देखिन्छ । अदालतमा प्रतिवादीले सो लिखतलाई लिफा दिएको भनी बयान गरेका छन् । यसप्रकार अनुसन्धानकै क्रममा लिखत नै किर्ते भन्ने, अदालतमा लिफा हो भन्ने फरक

फरक विरोधाभाष बयान प्रतिवादीले गरेको देखियो । जाहेरीमा उल्लेख भएको प्रतिवादीले विदेश पठाइदिने भनी लिएको रकमसमेत खुलाएको, मौकाको व्यक्ति नारायणबाबु श्रेष्ठले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेका छन् । सो बकपत्रबाट प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगारको लागि जाहेरवालाहरूबाट लिएको रकम स्पष्ट खुलाई दिएको देखिन्छ । प्रतिवादी जाहेरवालाहरूलाई विदेश माल्दिभ्स पठाइदिने कार्यमा संलग्नता रहेको तथ्य पुष्टि भएको देखिन आयो । प्रतिवादीले बिनाइजाजत वैदेशिक रोजगारीको कार्य गरेको देखिँदा निजको कसुरको मात्रा यकिन गरी सजाय निर्धारण गर्नुपर्ने देखिन आउने ।

प्रतिवादी बद्री गौडेललाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम कैद सजायसमेत गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरको सम्बन्धमा विचार गर्दा, तत्काल कायम रहेको वैदेशिक रोजगार ऐन, २०४२ को दफा २४(२) बमोजिम विदेश पुर्‍याई फर्किएको भने अभियोग दाबी यकिन रूपले गर्न नसकेको भनी बिगोको अङ्कसमेतलाई मध्यनजर गरी कैद नगरी रू.२५,०००।- जरिवाना हुने र जाहेरवालाहरूको हर्जानासहित रू.३,१५,०००।- बिगो प्रतिवादीबाट भरी पाउने गरी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट सजाय निर्धारण भएको पाइन्छ । सुरू न्यायाधिकरणले सजाय निर्धारण गर्दा लिएको आधार हेर्दा, वादीले अभियोग दाबीमा प्रस्टरूपमा प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई विदेश पठाएको भन्ने कुराको दाबी लिन नसकेको भनी तजबिजी तवरले जरिवाना मात्र हुने भनी सजाय गरेको देखिन्छ । लिखत तयार भएको समयमा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०४२ प्रचलनमा रहेको देखिन्छ । कैद तथा सजायको व्यवस्था सारवान् कानूनले गर्ने गर्दछ । सारवान् कानून पश्चात्‌दर्शी नहुने हुँदा कसुर भएपश्चात् बनेको वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ आकर्षण हुने देखिन आएन । यस स्थितिमा प्रतिवादीलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०४२ को २४ बमोजिम रू.२५,०००।- जरिवाना र हर्जानासहितको बिगो जाहेरवालाहरूले भराई पाउने गरी सुरू न्यायाधिकरणको फैसला अन्यथा भन्न मिलेन । वादी नेपाल सरकार तथा प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः लिखत मिति २०६३।०५।०२ को भएको देखिँदा कसुर हुँदाको अवस्थामा तत्काल प्रचलित वैदेशिक रोजगार ऐन, २०४२ को दफा २४ बमोजिम प्रतिवादी बद्री गौडेललाई रू.२५,०००।- (पच्चिस हजार रूपैयाँ) जरिवाना मात्र हुने गरी तजबिजी सजाय गरेको र निज प्रतिवादीबाट जाहेरवालाहरूले हर्जानासहित रू.३,१५,०००।- (तीन लाख पन्ध्र हजार रूपैयाँ) बिगो भराई पाउने गरी सुरू वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०६७।०६।१२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः केदारनाथ पौडेल, कालिबहादुर साम्यू लिम्बू

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इतिसंवत्२०७४सालमङ्सिर२७गतेरोज४शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा,** *०७२-CR-०४९१,*

*जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. डिम्मारिता शेर्पासमेत*

जाहेरवाली पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट निजको यौनाङ्गमा रातोपन रही कुमारित्व छेदन (Hymen Tear) भएको देखिन्छ । जबरजस्ती करणी मुद्दामा पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन महत्त्वपूर्ण प्रमाण हुन्छ। घटनाबाट प्रताडित पीडित जाहेरवाली सो वारदात घटनामा जीवित प्रत्यक्षदर्शी प्रमाण पनि हुने हुन्छ। आफूउपर प्रतिवादीले गरेको जबरजस्ती करणीको अपराधको बारेमा मौकामा अनुसन्धानको क्रममा खुलाई कागज गरेकी र सोही बेहोरा अदालतमा समेत आई बकपत्र गरिदिएकी हुँदा निज पीडित परिवर्तित नाम मुना शेर्पाको सो बकपत्र प्रमाण ऐनबमोजिम प्रमाण ग्रहण गर्न मिल्ने नै हुन्छ । साथै निजले गरेको सो बकपत्र निज जाहेरवालीको तत्काल भएको स्वास्थ्य परीक्षणबाट समेत थप पुष्टि हुन गएको पनि छ। वस्तुगत तथ्य प्रमाणबाट पुष्टि हुने यस प्रकारको प्रमाणहरूलाई उच्चकोटीको प्रमाण लिनुपर्ने नै हुने।

वस्तुतः वारदातस्थल एकान्त ठाउँमा पीडितलाई लगिएको छ । सो स्थानमा निज प्रतिवादीले लामो समयसम्म पीडितसँग बसेको भन्ने देखिएको र सो वारदातस्थलमा नै निज प्रतिवादी डिम्मारिता शेर्पाले जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने जाहेरवालीको कथन, स्वास्थ्य जाँच प्रतिवेदन, पीडितको बकपत्र तथा परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूसमेतबाट पुष्टि भइरहेको हुँदा प्रतिवादीले पीडिता परिवर्तित नाम मुना शेर्पालाई जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको देखिन आउने।

अर्का प्रतिवादी पासाङ शेर्पाको हकमा विचार गर्दा यी प्रतिवादी विरूद्ध किटानी जाहेरीसमेत परेको देखिँदैन । यी प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारी एवं अदालतमा समेत बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । सो इन्कारी बयानलाई साक्षीहरू पासाङ दोर्जी शेर्पा र आङफुर्वा शेर्पाले पासाङ शेर्पाले आरोपित कसुर गरेको छैन भनी बकपत्र गरेको देखियो । यी प्रतिवादी पासाङ शेर्पाले पीडित साङ्केतिक नाउँ मुना शेर्पालाई जबरजस्ती करणी गर्न सहयोग गरेको थियो भनी पुष्टि गर्न आधार अभियोजन पक्षले पेस गर्न सकेको देखिँदैन । अभियोग दाबी प्रमाणित गर्ने दायित्व वादी अभियोजनकर्ताको हुनेमा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ बमोजिम कसुर प्रमाणित गर्न सकेको पनि मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट नदेखिँदा यी प्रतिवादी पासाङ शेर्पाले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने नै देखिने।

अतः माथि विवेचित आधार, प्रमाणबाट पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०/१२/५ को फैसला केही उल्टी भई प्रतिवादीमध्येका डिम्मारिता शेर्पालाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(४) नं. बमोजिम ५(पाँच) वर्ष कैद सजाय भई प्रतिवादी डिम्मारिता शेर्पाबाट पीडिता जाहेरवालीले जबरजस्ती करणी महलको १० नं. बमोजिम रू.१०,०००।– (दस हजार) क्षतिपूर्ति भराई पाउनेसमेत ठहर्छ । अर्का प्रतिवादी पासाङ शेर्पालाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिएको हदसम्म पुनरावेदन अदालत राजविराजको मिति २०७०।१२।५ को फैसला

मनासिब हुँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया

इति संवत् २०७५ साल असार ८ गते रोज ६ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७३-CI-०५११, उत्प्रेषण / परमादेश, हरिप्रसाद दाहाल वि. राष्ट्रिय बिमा संस्थानसमेत

राष्ट्रिय बिमा संस्थान ऐन, २०२५ को दफा २९(१) मा सञ्चालक समितिले बनाएको नियमावली नेपाल सरकारबाट स्वीकृत नभई लागु हुने छैन भन्ने स्पष्ट व्यवस्था गरेको पाइन्छ । ऐनको यस व्यवस्थाले नियमावली बनाउन सञ्चालक समितिलाई अधिकार दिए पनि सञ्चालक समितिले बनाएको नियमावली नेपाल सरकारबाट स्वीकृत नभएसम्म लागु हुने अवस्था नदेखिने।

पुनरावेदक हरिप्रसाद दाहाल राष्ट्रिय बिमा संस्थानको च.नं.४४/०७०-०७१ मिति २०७०/४/२४ को पत्रबाट उमेरको हदका कारण मिति २०७०/४/२६ देखि लागु हुने गरी अनिवार्य अवकासको लागि पत्र दिएको देखिने।

नियमावलीको संशोधित प्रावधान नेपाल सरकारबाट मिति २०७०/१०/२३ मा मात्र स्वीकृत भएको देखिँदा सो प्रावधानका व्यवस्था सोही मिति पश्चात्मात्र प्रभावकारी हुने हुन्छ। सञ्चालक समितिले नियमावली जहिलेसुकै बनाएको भए पनि त्यसको लागु हुने मिति नेपाल सकारले स्वीकृत गरेको मितिलाई नै लिनुपर्ने हुन्छ। निर्णय कार्यान्वयनमा नै नआएको अवस्थामा र निर्णय नेपाल सरकारबाट स्वीकृत नहुँदै अघि नै सेवा निवृत्त भइसकेका कर्मचारीले पछि लागु भएको नियमावलीको व्यवस्थाअनुसार सुविधा प्राप्त गर्न सक्ने नदेखिने।

नियमावलीको संशोधित प्रावधान नेपाल सरकारबाट मिति २०७०/१०/२३ मा स्वीकृत हुनुअगावै पुनरावेदक हरिप्रसाद दाहाल मिति २०७०/४/२६ मा सेवाबाट अनिवार्य अवकाश भएको देखिँदा जुन बखत जे जस्तो सेवा सुविधा प्राप्त गर्ने नियमावली चालु अवस्थामा हुन्छ । सोही सुविधासम्म कर्मचारीले पाउने हुन्छ। कार्यान्वयनमा नै नआएको नियमावलीको प्रावधानअनुसारको सुविधा प्रदान गर्न कानूनतः मिल्ने नदेखिने।

अतः पुनरावेदन अदालत पाटनबाट रिट निवेदन खारेज हुने ठहऱ्याएको मिति २०७२/१२/१७ को फैसला (आदेश) मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विद्याराज पौडेल

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल चैत्र १२ गते रोज २ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०७१-CI-०९७४, टन्टा खिचोला चलन, लगन राउत अहिरसमेत वि. मेनेजरप्रसाद यादव

न.नं.५, ६ र १४ को जग्गाहरू विवादमा रहेको देखिन्छ । न.नं.५ मा ०-१-१-११३।४, न.नं.६ मा ०-०-१७-१० र न.नं.१४ मा ०-०-६-

२१।४ गरी ०-२-५-४ जग्गा रहेको देखिन्छ। वादी मेनेजरप्रसाद यादवको कि.नं.३३, न.नं.१६ मा १-१२-१-७१।२ जग्गा रहेको नक्सा मुचुल्काबाट देखिन आएको छ । वादीको दर्ता स्रेस्ताअनुसार कि.नं.३३ मा जग्गाको क्षेत्रफल पुगेको देखिन आएन । प्रतिवादीहरूको जग्गा दर्ता स्रेस्ताभन्दा भोगमा बढी नै रहेको देखिन आउने।

वस्तुतः पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०६९।०१।२० मा भएको नक्साबाट प्रतिवादीहरूको जग्गा स्रेस्ता तथा ट्रायल चेकमा देखिएको जग्गाभन्दा बढी देखिएको र वादीको दाबीको कि.नं.३३ मा कम जग्गा देखिन आएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूबाट वादीको जग्गामा खिचोला गरेको पुष्टि हुन आएको छ । विवादित न.नं.५, ६ र १४ माकुल ०-२-५-४ जग्गा रही वादीको कि.नं.३३ अन्तर्गत पर्न जाने देखिन्छ। सो जग्गाहरू प्रतिवादीहरूले भोग गरी खिचोला गरेको देखिने।

पुनरावेदन अदालत हेटौंडाले फैसला गर्दा मिति २०६९।०१।२० को नक्सा मुचुल्कालाई आधार लिए तापनि सो फैसलामा सुरू अदालतको मिति २०६६।०९।०५ को नक्सा मुचुल्काको न.नं.७ उल्लेखसम्म गरेको देखियो । तथापि खिचोला गरेको जग्गाको आकार, प्रकार अवस्थिति एउटै भई एउटा न.नं.१४ सम्म उल्लेख हुनुपर्नेमा न.नं.७ उल्लेख भई फरक पर्न गएको देखिने।

अतः पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसलामा भई आएको नक्सामा विवादित न.नं.५, ६ पछि न.नं.१४ हुनुपर्नेमा न.नं.७ भएबाट मुद्दामा तात्विक फरक पर्नसक्ने अवस्था नदेखिँदा उक्त न.नं.७ को सट्टा न.नं.१४ कायम हुने गरी सच्याई अरू पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट सुरू इन्साफ सदर हुने।

इजलास अधिकृतः टेकराज जोशी

कम्प्युटर : संजय जैसवाल

इति संवत् २०७५ साल जेष्ठ १७ गते ५ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७१-CI-०४५८, उत्प्रेषण / परमादेश, कमल साह कानू वि. गणेश साह कानूसमेत

कि.नं.१३७ को साबिक जग्गाधनी अंशियारबाहेकका व्यक्तिको नाउँमा रहेको र अंशियार गणेश साहले २०२९ सालमा खरिद गरेपछि २०४३ सालमा अंश मुद्दाको मिलापत्र गरी अलग भए पनि सो अवधिमा यी निवेदक र प्रतिवादी गणेश साह एकासगोलमै रहेको पाइयो। लामो समयसम्म एकासगोलको अवस्थामा रही सगोलमै जोत कमोद गरेको कि.नं. १३७ को जग्गा दाजु जग्गाधनी भाइ मोही भई जोतकमोद हुन सक्ने नहुने।

अघि अर्कै जग्गाधनी भए पनि २०२९ सालदेखि २०४३ सालमा अंशियार दाजु भाइ एकासगोलमा रहँदा दाजु गणेश जग्गाधनी र भाइ मोही भएको तथ्यमा विवाद छैन । मोहीमा हक लगत कट्टा गर्ने गरी भएको निर्णयउपर पुनरावेदन गरी बदर गर्न जान सक्नुपर्ने हुन्छ । वैकल्पिक उपचारको बाटोसमेत रहेकोमा सोतर्फ निवेदकले कानूनी प्रक्रिया अवलम्बन गरेको देखिएन । रिट क्षेत्रबाट सबुद प्रमाण बुझी मोही हक बेहक कस्को

हुने भनी निष्कर्षमा पुग्ने अवस्था पनि नहुने।

अतः एकापरिवारको अवस्थामा अंशियार दाजुभाइ जग्गाधनी र मोही हुन नसक्ने भनी यस अदालतबाट विभिन्न न्यायिक सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएकोले एकै परिवारको मोही लगत कट्टा गर्ने गरी भूमिसुधार कार्यालयको मिति २०७०।११।६ को टिप्पणी आदेशलाई उत्प्रेषणको आदेशबाट बदर गर्न नमिली खारेज गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको मिति २०७१।३।४ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: यमप्रसाद बास्कोटा

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७३ साल असोज ११ गते रोज ३ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री तेजबहादुर के.सी.,** ०७४-CR-०४६६, जबरजस्ती करणी, कमल नेपाली वि. नेपाल सरकार

जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. हेर्दा, *कसैले कुनै महिलालाई निजको मन्जुरी नलिई करणी गरेमा वा सोह्र वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिकालाई निजको मन्जुरी लिई वा नलिई करणी गरेमा निजले जबरजस्ती करणी गरेको ठहर्छ* भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा पीडित परिवर्तित नाम कञ्चनपुर ग कुमारीको उमेर सात वर्षको देखिएको छ । पीडितको तत्काल गरिएको Swab जाँच तथा मौका एवं अदालतमा बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले आफूलाई जबरजस्ती करणी गरेको बेहोरा र जाहेरवाली ७५घ कुमारीले जाहेरी दरखास्तको बेहोरालाई समर्थन हुने गरी अदालतमा बकपत्र गरेको मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिन्छ । जबरजस्ती करणी अपराध अत्यन्त संवेदनशील गम्भीर प्रकृतिको कसुर हो। महिलाको अस्मितासँग जोडिएको यो कसुर महिलाको सामाजिक जीवन, प्रतिष्ठा, हक र हितसँग प्रत्यक्ष सरोकार राख्दछ । जबरजस्ती करणी अपराधमा मूल चश्मदिद गवाह अर्थात् प्रत्यक्ष प्रमाण साधारणतया प्राप्त हुन सक्दैन । खास गरी करणीसम्बन्धी अपराधमा करणी गरिएकी पीडित नै जीवित प्रमाण हुने।

अबोध बालिकाले आफूमाथि भएको जबरजस्ती करणी जस्तो पाशविक अपराधको जस्ताको तस्तै स्वाभाविक रूपमा अभिव्यक्त गरेको भनाइलाई अदालतले अन्यथा गर्नुपर्ने कुनै आवश्यकता देखिँदैन । बालिकाउपर आजीवन सामाजिक दाग लाग्ने जबरजस्ती करणी जस्तो जघन्य अपराधमा अबोध बालिकालाई पीडित देखाई स्वयम् पीडित बालिकाको आमाले नै प्रतिवादीउपर जाहेरी दिनुपर्ने अरू कुनै कारण पनि देखिँदैन । अतः उपर्युक्त तथ्यगत आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीले नै पीडित ७ वर्षकी नाबालिक परिवर्तित नाम कञ्चनपुर ७५ग लाई जबरजस्ती करणी गरेको पुष्टि हुन आउने।

प्रतिवादीलाई सजायको हकमा विचार गर्दा जबरजस्ती करणी महलको ३(१) नं. मा दश वर्षभन्दा मुनिको बालिका जबरजस्ती करणी गर्नेलाई १० वर्षदेखि १५ वर्षसम्म कैद सजाय हुन सक्ने र ऐ. महलको १०(ग) नं. मा यस महलअन्तर्गतको मुद्दा फैसला गर्दा जबरजस्ती करणी ठहर गरेकोमा

सोही फैसलामा यस महलबमोजिम कसुरदारबाट भराइदिनुपर्ने क्षतिपूर्तिसमेत उल्लेख गरी सम्बन्धित महिलालाई भराइदिनुपर्ने छ भनी स्पष्ट रूपमा उल्लेख गरेको उच्च अदालत दिपायल, महेन्द्रनगर इजलासको मिति २०७३।१२।२८ को फैसलालाई अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार, प्रमाणबाट जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. ३(१) नं. को कसुरमा सोही ३(१) नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई १० वर्ष कैद हुने तथा प्रतिवादीबाट जाहेरवालीलाई रू. ५०,०००।- क्षतिपूर्ति भराइदिने ठहऱ्याएको सुरू फैसलालाई सदर गरेको उच्च अदालत दिपायल, महेन्द्रनगर इजलासको मिति २०७३।१२।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- विद्याराज पौडेल
कम्प्युटर: विनोदकुमार बनिया
इति संवत् २०७५ साल वैशाख १३ गते रोज ५ शुभम्।

## इजलास नं.६

### १

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी,** *०७३-CR-१७६०, वैदेशिक रोजगार कसुर, माधव पोखरेल वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीले सुरू अनुसन्धान तथा यस न्यायाधिकरणमा मैले टिकट र भिसाको मात्र जिम्मा लिएको हुँदा टिकट र भिजिट भिसा बनाई दुबईसम्म पठाउने काम गरेको हुँ, जाहेरवालाहरू रमेश राईसमेतका जना ६ व्यक्तिहरू दुबई पुगेर फर्की आएको कागजमा भएको सहीछाप आफ्नै हो भनी स्वीकार गरेकोमा केवल कागज मात्र अगाडिको मिति राखी जबरजस्ती लिखत कागज गराएका हुन् भन्ने जिकिर भए तापनि सो कागजको सम्बन्ध कुनै चुनौती दिई मुलुकी ऐन अ.बं. ३८ नं. बमोजिम उजुरी गरी बदर गराउन सकेको अवस्थासमेत देखिँदैन । यी प्रतिवादीले जाहेरवालालाई गरिदिएको मिति २०७२।२।५ को लिखतलाई अन्यथा प्रमाणित गराउन सकेको वा बदर गराउन सकेको नदेखिएकोबाट उक्त लिखत कागजको वैधता कायम रहेकै देखियो । उक्त लिखतका साक्षी मनिषा राईले प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा जापान मुलुकमा पठाइदिन्छु भनी प्रतिव्यक्ति रू.३,००,०००।- (तीन लाख रूपैयाँ) बुझिलिएको ठिक साँचो हो भनी अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष कागज गरेको देखिएको र सोही बेहोरालाई समर्थन हुने गरी न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई बकपत्रसमेत गरिदिएको देखिन्छ । साथै जाहेरवालाहरू सुवास राई र रमेश राईले यस न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई आफ्नो जाहेरीलाई खम्बिर हुने गरी बकपत्रसमेत गरिदिएको देखिँदा उपर्युक्त आधार र कारणहरूबाट प्रतिवादी माधव पोखरेलले बिनाइजाजत जाहेरवालालाई वैदेशिक रोजगारमा पठाइदिन्छु भनी रकम लिई भनेबमोजिम वैदेशिक रोजगारमा नपठाई रकमसमेत फिर्ता गरेको नदेखिँदा प्रतिवादीको उल्लिखित कार्य वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुर अपराध भएको तथ्य पुष्टि हुन आउने ।

अतः वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम

प्रतिवादी माधव पोखरेललाई ३ वर्ष कैद तथा रू. ३,००,०००/- (तीन लाख जरिवाना हुने तथा पीडित जाहेरवालाहरूलाई हर्जाना भराइदिनेसमेत ठहर गरेको २०७३।८।२१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: अम्बिकाप्रसाद दाहाल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल आषाढ १४ गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७४-CR-१५१०, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. सरोज रामदाम भन्ने डम्बरकुमार रामदाम*

प्रतिवादीलाई हदैसम्मको सजाय हुनुपर्नेमा आधा सजाय भएकाले न्यायाधिकरणको फैसला केही उल्टी गरी हदैसम्मको सजाय हुनुपर्दछ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरका सन्दर्भमा विचार गर्दा जाहेरवाला शरण आलेलाई वैदेशिक रोजगारीका लागि विदेश पठाएको भन्ने देखिने राहदानी, भिसा, हवाई टिकट जस्ता कुनै भरपर्दो प्रमाण पेस हुन आएको देखिँदैन । विदेश गएको र फर्की आएको हो भने सोसम्बन्धी तथ्य प्रमाणित हुने केही-न-केही भरपर्दो प्रमाण हुनु स्वाभाविक थियो । निज जाहेरवालालाई विदेश पठाएको कुरामा इन्कार रही प्रतिवादी डम्बरकुमार रामदामले बयान गरेको देखिन्छ । अन्य विदेश पठाइएका भनिएका व्यक्तिहरूका सम्बन्धमा पनि कुनै तथ्ययुक्त आधार, प्रमाण प्रस्तुत हुन आएको पाइएन। जाहेरवालाले न्यायाधिकरणसमक्ष बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले विदेश पुऱ्याएको मसँग कुनै प्रमाण छैन भनी लेखाएको पाइयो। यस अवस्थामा केवल जाहेरवालाको मौखिक कथनकै भरमा निजलाई विदेश पठाएको रहेछ भनी मान्न सकिने अवस्था देखिँदैन । तसर्थ जाहेरवालालाई विदेश पठाउने कार्य सम्पन्न भइसकेको नदेखिँदा दाबीबमोजिमको कसुरजन्य कार्य पूर्ण भएको रहेछ भनी मान्न नमिल्ने।

वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ मा "कसैले दफा १० विपरीत इजाजतपत्र नलिई वैदेशिक रोजगार व्यवसाय सञ्चालन गरेमा वा कसैलाई वैदेशिक रोजगारमा लगाइदिन्छु भनी झुट्टो आश्वासन दिई वा प्रलोभन देखाई वैदेशिक रोजगारीमा लगाइदिने उद्देश्यले कुनै रकम लिएमा वा विदेश पठाएमा त्यसरी लिएको रकम र सोको पचास प्रतिशतले हुने रकम हर्जानाबापत असुल गरी त्यस्तो व्यक्तिलाई विदेश जान र आउन लागेको खर्चसमेत भराई निजलाई तीन लाख रूपैयाँदेखि पाँच लाख रूपैयाँसम्म जरिवाना र तीन वर्षदेखि सात वर्षसम्म कैद हुने छ। विदेश पठाइ नसकेको भए सो सजायको आधा सजाय हुनेछ" भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ। माथि उल्लेख गरिएअनुसार जाहेरवालालाई विदेश पठाउन निजसमेतबाट रकम लिएको तर विदेश पठाइसकेको तथ्य प्रमाणित भएको नदेखिएको हुँदा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ को “विदेश पठाइ नसकेको भए सो सजायको आधा सजाय हुने छ" भन्ने अन्तिम वाक्य नै आकर्षित हुने।

अतः प्रतिवादी डम्बरकुमार रामदामले जाहेरवालालाई विदेश पठाइसकेको तथ्य प्रमाणित भएको नदेखिँदा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४

को दफा ४३ मा रहेको “विदेश पठाइ नसकेको भए सो सजायको आधा सजाय हुनेछ" भन्ने प्रावधानअनुसार सजाय हुने ठहर गरेको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७३/९/१७ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: विजय खड्का

इति संवत् २०७७ साल जेठ ३० गते रोज ६ शुभम् ।

**३**

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CR-००८४, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. राजाराम धिताल*

जाहेरवालाले प्रतिवादीलाई मिति २०७१/१२/१० मा पन्ध्र लाख रूपैयाँ व्यवसाय गर्नका लागि ऋण उपलब्ध गराएकोमा एक वर्षमा सात लाख फिर्ता दिएको र बाँकी आठ लाखबापत कागज गरिएको भन्ने देखिन्छ । उक्त रू. आठ लाख प्रतिवादीले फिर्ता नगरेको कारणबाट वैदेशिक रोजगारको कागज गराएको भन्ने जाहेरवालाको बकपत्रबाट देखिएको छ । यसबाट वैदेशिक रोजगारीका लागि पठाउने सर्तमा जाहेरवाला र प्रतिवादीबिच कारोबार वा व्यवहार भएको रहेछ भनी मान्न मिल्ने नदेखिने ।

मिसिल प्रमाणबाट जाहेरवालालाई विदेश पठाउनका लागि भनी प्रतिवादीले रकम लिएको नभई व्यवसाय गर्नका लागि ऋण लिएको देखिएको, लिएको ऋण रकममध्ये केही फिर्ता गरी नयाँ कागज गरेकोसमेत पाइयो । यसरी भएको कागजबमोजिमको रकम समयमा भुक्तान नगरेको कारणबाट वैदेशिक रोजगारको सन्दर्भसम्म खुलाई कागज भएको देखिन्छ । कागजमा उल्लेख गरिएको यही बेहोरालाई नै निर्णायक (Conclusive) आधार मानेर कसुर ठहर गर्नु न्यायोचित देखिँदैन । सामान्य लेनदेनको कारोबार गरिएको अवस्थामा पनि तमसुक लिखतमा वैदेशिक रोजगारीको प्रयोजन उल्लेख गरेर ऋणीउपर कानूनी जटिलता र दबाब सिर्जना गर्ने विकृत वा जालझेलपूर्ण सामाजिक सन्दर्भप्रति पनि विवेकपूर्ण दृष्टि पुऱ्याउनु आवश्यक देखिन्छ । प्रतिवादीले गैरकानूनी रूपमा वैदेशिक रोजगारीको कारोबार वा व्यवसाय गरेको, वा सो कुराको आडमा ठगीजन्य कार्य गरेको तथ्य अभियोजन पक्षले शंकारहित प्रमाण पेस गरी कसुर प्रमाणित गर्न सकेको देखिएन । देवानी दायित्व प्रकृतिको व्यवहार वा कारोबारको विषयलाई लिएर वैदेशिक रोजगारीको कसुरजन्य कार्य ठहर गर्नु न्यायोचित हुँदैन । अतः प्रमाणको अभावमा कसुर ठहर गर्न मिलेन । प्रतिवादी राजाराम धितालले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरी भएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७४/५/६ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल जेठ ३० गते रोज ६ शुभम् ।

**४**

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CR-०७३५, ठगी, नेपाल सरकार वि. प्रेमसागर पौडेल*

प्रतिवादीले चाइनाबाट सामान मगाइदिने सर्तमा रू.१५,००,०००/- लिएकोमा सम्झौताबमोजिमको सामान नल्याएको हुँदा

कारबाही गरिपाउँ भन्ने जाहेरी दरखास्त रहेकोमा जाहेरीसाथ पेस भएको कागजात बेहोराबाट Agency transfer का लागि दिएको भन्ने देखियो। यसरी कुन प्रयोजनको लागि रकम लिएको, कसले रकम दिएको भन्ने नै स्पष्ट हुन सकेको छैन। सामान ल्याउनको लागि रकम लिएको भन्ने जाहेरी बेहोरा जाहेरीसाथ पेस भएको कागजबाट नै समर्थन हुन सकेको छैन भने जुन प्राइभेट कम्पनीको तर्फबाट रकम लिएको भनिएको छ उक्त कम्पनीको धनी अदालतमा उपस्थित भई दाबी प्रमाणित गर्न सकेकोसमेत नदेखिने।

प्रस्तुत मुद्दामा सामान ल्याउने गरी भएको सम्झौताबमोजिम सामान नल्याएको भन्ने जाहेरी तथा Company Agency ट्रान्सफर गर्न लिएको १५ लाखबमोजिम कम्पनी ट्रान्सफर नगरेको भन्ने लिखतसमेत देखिन्छ। जाहेरवालाले अदालतसमक्ष बकपत्र गर्दा सामान ल्याउन पेस्की स्वरूप रू.१५ लाख लिएर सामान नल्याएको र पैसा फिर्ता गर्न आलटाल गरेकोले जाहेरी दिएको भनी लेखाएको र मौकामा कागज गर्ने हरिप्रसाद ढुङ्गाना र बाबुलाल साहले कागज गर्दा प्रतिवादीले सम्झौताबमोजिम Agency transfer गर्न नसकेको भनी लेखाएको पाइयो । यसरी सम्झौताको बेहोराबमोजिमको उद्देश्य तथा प्रतिफलविपरीत जाहेरी तथा अभियोग अस्पष्ट, द्विविधाजनक देखिनुका साथै जाहेरी बेहोरा तथा लिखतबमोजिमको कार्य निजहरू २ पक्षबिचको देवानी प्रकृतिको विषय देखिएको छ। सम्झौताबमोजिम काम नभएमा सोहीबमोजिम फिराद गर्नुपर्नेमा ठगी जस्तो फौजदारी कसुरको बाटो अवलम्बन गर्नु अनुचित तथा मुलुकी ऐन, ठगीको महलको ३ नं. विपरीतसमेत देखिने।

तसर्थ, जाहेरी बेहोरा र लिखत सम्झौताको उद्देश्य फरकफरक देखिएको तथा ती दुवै विषय फौजदारी प्रकृतिको नभई लेनदेनको विषय देखिँदा व्यापारिक प्रकृतिको देवानी विषयलाई लिएर ठगी जस्तो फौजदारी कसुरको मुद्दामा जाहेरी परी प्रतिवादी प्रेमसागर पौडेलउपर कारबाही चलाएको कार्य कानूनविपरीत हुँदा प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।१२।४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट
इति संवत् २०७७ साल जेठ ३० गते रोज ६ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७५-CR-०७४६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. मिङक्युर लामा तामाङ*

प्रतिवादीहरू आइमान लामा र मिङ्क्युर लामा तामाङले कर्तव्य गरी मारेको भनी जाहेरी परेकोसम्म देखिन्छ । तर निज जाहेरवाला प्रत्यक्षदर्शी साक्षी नभएर निजले सुनी जानेको कुराको आधारमा शंकासम्म व्यक्त गरेको पाइयो । प्रतिवादी मिङ्क्युर लामा तामाङले अदालतमा बयान गर्दा पुन्टे तामाङ र आइमान लामाबिच बाटोको विषयमा वादविवाद भएको र पुन्टे तामाङ आफ्नो काका ससुरा पर्ने भएकोले गाउँलेहरूले आफूलाई केही शब्द बोल्न आग्रह गरेबमोजिम निजलाई सम्झाउन खोज्दा नमानेकोले आफ्नो घर गएको हो, आइमान

लामा र पुन्टेबिच धकेलाधकेल भई पुन्टे तामाङ लडेर ढुङ्गामा टाउको ठोकिएर पुन्टे तामाङको मृत्यु भएको कुरा भोलिपल्ट सुनी थाहा पाएको हुँ भनी आरोपित कसुरमा इन्कार रहेको पाइयो । बाटोको सम्बन्धमा विवाद हुँदा छलफलका क्रममा वारदातस्थलमा उपस्थित रहेका प्रतिवादीका साक्षीहरू खुपबहादुर तामाङ, नोरबहादुर तामाङ, छेपुङ तामाङले वारदातस्थलबाट मिङक्युर लामा तामाङ हिँडिसकेपछि प्रतिवादी आइमान तामाङले धकेल्दा लडेर पुन्टे तामाङको मृत्यु भएको कुरा आँखाले नै देखेको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ । मृतककी श्रीमती फुलजोम तामाङले घटना वरिपरि कोही कसैलाई नदेखेको, नचिनेको भनी बकपत्र गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीमध्येका आइमान तामाङले मौकामा बयान गर्दा पुन्टे तामाङ र आफूबिचमा धकेलाधकेल हुँदा निज लडी रूखमा ठोकिई जमिनमा लड्दा जमिनमा रहेको धारिलो ढुङ्गामा ठोकिई मृत्यु भएको हो, घटनास्थलमा मिङक्युर लामा तामाङसमेतलाई देखेको, निजले पुन्टे तामाङलाई कुटपिट गरे गरेनन् सो कुरा आफूलाई थाहा भएन भनी बयानमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादी आइमन तामाङले अदालतसमक्ष बयान गर्दा आफू अपराधमा इन्कार रही सहप्रतिवादी मिङक्युर लामालाई पोल गरेको भएपनि सो कुरा निजले मौकामा गरेको बयानमा खुलाइएको देखिँदैन । सहअभियुक्तले अदालतमा बयान गर्दा उल्लेख गरेको संदिग्ध बेहोराबाहेक यी प्रतिवादी कसुरदार हुन् भन्ने पुष्टि हुने कुनै पनि प्रमाण वादी पक्षबाट पेस भएको पाइएन। अन्य कुनै स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित नभएको सहअभियुक्तको संदिग्ध पोलको आधारमा नै कसुर ठहर गर्नु न्यायोचित देखिँदैन । अन्य प्रमाणबाट प्रतिवादी कसुरदार हुन् भन्ने नदेखिएको र सहअभियुक्तको पोल प्रमाणमा ग्रहणयोग्य नदेखिएको हुँदा प्रतिवादी मिङ्क्युर लामा तामाङलाई कसुरदार ठहर गर्न मिल्ने अवस्था देखिन नआउने ।

अतः प्रतिवादी मिङ्क्युर तामाङउपरको अभियोग दाबी भरपर्दो र शंकारहित तबरबाट पुष्टि हुन आएको नदेखिएको हुँदा निजलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको मिति २०७४/६/२४ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल जेठ गते २८ रोज ४ शुभम्।

## इजलास नं.७

१

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री डम्बरबहादुर शाही,** ०६९-WO-००४४, परमादेश, रघुवर राजभण्डारी वि. शुकदेव राजभण्डारीसमेत

निवेदकले दर्ताको माग गरेको जग्गाको क्षेत्रफल ०-१-२-० रहेको र सर्भेको नक्सामा घर देखिएको छ भन्ने पनि भनाइ छ। यसरी हेर्दा निवेदन मागबमोजिमको घरजग्गा अत्यन्त न्यून क्षेत्रफलको जग्गासमेत देखियो। मालपोत कार्यालयको लिखित जवाफ हेर्दा, निवेदकको मागबमोजिम स्ववासी

जग्गा दर्ता हुने वा नहुने भन्ने कार्यालयबाट टुङ्गो लागिसकेको नहुँदाकै अवस्थामा रिट निवेदन दिएको भन्ने देखिन्छ । साथै यस अदालतको आदेशबमोजिम प्राप्त भूमि सुधार तथा मालपोत कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०७६।०३।१९ च.नं.८६४५ पत्र हेर्दा, निवेदन माग दाबीबमोजिमको का.जि. नगर वडा नं.२१ को सिट नं.११०४-२२ को कि.नं.३६७ क्षे.फ ०-१-२-० को स्ववासी जग्गा दर्ता समितिबाट मिति २०७३।०१।३१ मा दर्ता गरिदिने भन्ने सिफारिससम्म भई निवेदकले दर्ता गर्न पहल नगरेकोले हाल मिसिल निष्क्रिय अवस्थामा रहेको छ भन्ने उल्लेख देखिन्छ । यसवाट विपक्षी मालपोत कार्यलयले दर्ता गर्न इन्कार गरिसकेको भन्ने देखिएन । निश्चित प्रक्रिया अवलम्बन गर्नुपर्ने भनी कुनै कानूनमा उल्लेख भएकोमा सो कानूनी प्रक्रिया पालना गर्नुपर्ने हुन्छ । घर जग्गा दर्ता जस्तो संवेदनशिल विषयमा कागज प्रमाणको आधारमा बुझेर हुने नहुने आधार कारणसहित निर्णय गर्नुपर्छ । यसरी रिट निवेदकले कार्यालयमा प्रक्रियागत अवस्थामा रही कारबाही नटुङ्गिदै रिट क्षेत्राधिकारबाट प्रवेश गरेको ।

तसर्थः उल्लिखित आधार कारणबाट निवेदकको मागबमोजिमको स्ववासी घरजग्गा दर्ताको कार्य मालपोत कार्यालयमा प्रक्रियागत अवस्थामा नै रहेको देखिँदा मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिलेन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: शारदादेवी पौडेल

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७६ साल पुस २८ रोज २ शुभम् ।

## २

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री डम्बरबहादुर शाही,** ०६९-WO-०९८९, उत्प्रेषण, डम्बरदेव उप्रेती वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत

निवेदकको निवेदन बेहोरा हेर्दासमेत आफ्नो नाउँमा रहेको ज.वि. ०-१-० जग्गामा भोगको आधारमा मिति २०६०।६१ मा साबिकको कि.नं.१३११ जग्गासमेत समेटी नयाँ कायम कि.नं.११५९ क्षेत्रफल ००५४५.६० व.मी. भएको भन्ने देखियो । यसमा निवेदकले के कसरी साबिकको जग्गाभन्दा बढी जग्गा प्राप्त हुन आएको हो भन्ने कुराको कुनै कानूनी स्रोत खुलाउन सकेको पाइँदैन । यसबाट निवेदकले साबिकमा कायम रहेको कित्ताको जग्गामा सार्वाजनिक जग्गासमेत घुसाई भोग गरेको भन्ने नै देखिने ।

मालपोत ऐन, २०३४ को दफा २४ मा सरकारी, सार्वजनिक वा सामुदायिक जग्गा व्यक्ति विशेषका नाउँमा दर्ता वा आवाद गर्न गराउन हुँदैन । व्यक्ति विशेषको नाउँमा दर्ता गरी आवाद गरेकोमा त्यस्तो दर्ता स्वतः बदर हुने छ भन्ने उल्लेख पाइन्छ । यसरी निवेदकले आफ्नो साबिकको जग्गामा सार्वजानिक जग्गा घुसाई नयाँ कि.नं. कायम गरेकोमा उक्त जग्गाको साबिकको निवेदकको क्षेत्रफल छुट्याई नयाँ कि.नं. कायम गरी बाँकी ज.वि ०-०-१२ नेपाल सरकारको नाउँमा सार्वजनिक कायम गर्ने अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट मिति २०६९।३।१८ मा भएको निर्णयबाट निवेदकको दर्ता स्वामित्वको

जग्गामा कुनै असर परेको देखिएन । यसरी निवेदकले आफ्नो जग्गामा सरकारी जग्गा घुसाई सोउपर उजुर परी छानबिनबाट ठहर भएको कार्यमा निर्णय गर्दा निवेदकको हकमा असर नगरेको स्थितिमा प्रशासकीय वा व्यवस्थापकीय निर्णयमा निवेदकलाई बुझ्नु नै पर्छ भन्न नमिल्ने भएकोले निवेदकले सुनुवाइको मौका नै दिएन भन्ने निवेदन जिकिर कानूनसम्मत नदेखिने ।

निवेदकको साबिकको क्षेत्रफलमा कुनै असर नपर्ने गरी भएको निर्णयबाट संविधान प्रदत्त हकमा असर परेको नदेखिँदा निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: शारदादेवी पौडेल

कम्प्युटर: रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७६ साल पुस २८ गते रोज २ शुभम् ।

**३**

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CR-०४०६, लागु औषध, नेपाल सरकार वि. शुभम राई*

प्रत्यर्थी/प्रतिवादी शुभम राईले सुरूदेखि नै आरोपित कसुरमा इन्कार रहँदै बरामदित लागु औषधको बारेमा अनभिज्ञता प्रकट गर्दै बयान गरेको देखिएकोमा आरोपित कसुरमा कसुरदार ठहर भएका सहप्रतिवादी निज किरण अधिकारीले पनि उक्त कुरालाई समर्थन गर्दै उक्त लागु औषध ब्राउनसुगर आफूले एक्लै खरिद गरेको र सोबारेमा निज शुभम राईलाई कुनै जानकारी नभएको भनी अदालतमा समेत बयान गरिरहेको अवस्था छ । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा **"फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ"** भन्ने कानूनी व्यवस्थाअनुरूप वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट यी प्रतिवादीउपरको कसुर पुष्टि गर्ने कुनै सबुद प्रमाण पेस दाखिल गर्न सकेको पाइँदैन । आफ्नो अभियोग दाबीलाई शंकारहित तवरले पुष्टि गर्न नसकेको अवस्थामा शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ भन्ने फौजदारी कानूनको सर्वमान्य सिद्धान्त रहेको परिप्रेक्ष्यमा केवल कसुर ठहर भएका सहप्रतिवादी किरण अधिकारीसँग एउटै मोटरसाइकलमा हिँडेको भन्ने आधारमा मात्र यी प्रतिवादीलाई समेत सोहीसरह सजाय हुन मागदाबी लिएको पाइएको ।

तसर्थ, माथि उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट सुरू झापा जिल्ला अदालतले प्रतिवादी शुभम राईलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनेगरी गरेको फैसलालाई सदर हुने ठहराएको उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासको मिति २०७४/५/५ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कर्णबहादुर राई

कम्प्युटर: रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७७ साल जेष्ठ २० गते रोज ३ शुभम् ।

४

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७७-WO-०३०६, उत्प्रेषण /परमादेश, श्रीराम न्यौपानेसमेत वि. नेपाल इन्जिनियर्स एसोसिएसन पुल्चोक, ललितपुरसमेत*

ऐनको दफा ५(१)(ङ) र ६(१) को व्यवस्थालाई सँगै राखी अध्ययन गर्दा दफा ५(३) को व्यवस्था इन्जिनियर्स एसोसिएसनको निर्वाचन नभएसम्मको लागि गरिएको हो भन्ने देखिन्छ ।

एकपटक निर्वाचन भई पदावधि समाप्त भएका सदस्यहरूलाई निरन्तरता दिनेसम्बन्धी व्यवस्था यो हो भन्ने देखिँदैन । त्यस्ता पदावधि समाप्त भएका निर्वाचित सदस्यहरू दफा ६(१) बमोजिम निर्वाचनद्वारा नै चुनिएर आउनुपर्ने भन्ने दफा ६(१) मा स्पष्ट व्यवस्था देखिई एकपटक निर्वाचन भई निर्वाचित सदस्य परिषद्मा पठाइसकेको अवस्थामा दफा ६(१) मा पुनः मनोनयन वा निर्वाचन हुन सक्ने भनी गरिएको व्यवस्था अर्को पदावधिको लागि निजहरू अयोग्य हुँदैनन् भन्नेसम्म व्यवस्था हो । निर्वाचित सदस्यहरूको हकमा पुनः निर्वाचनद्वारा नै एसोसिएसनबाट प्रतिनिधित्व हुनसक्ने हो। ऐनमा पदावधि समाप्त भएका सदस्यहरूलाई निरन्तरता दिनेसम्बन्धी कुनै व्यवस्था रहे भएको नदेखिँदा परिषद् गठनको पवित्रतामा असर पर्ने गरी रिट निवेदकहरूको पदावधि सकिएपछि पनि निजहरूले नै निर्वाचन नभएसम्मको लागि परिषद्को सदस्यको रूपमा निरन्तरता पाउनुपर्ने भन्ने निवेदन जिकिर उक्त कानूनी व्यवस्थाको रोहमा मिल्ने नदेखिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार कारणहरूबाट रिट निवेदकहरूले नेपाल इन्जिनियरिङ परिषद्को सदस्यको पदावधि समाप्त भए तापनि साबिकमा घोषणा गरेको चुनावको मितिमा निर्वाचन हुन नसकेको अवस्थामा निवेदकहरूलाई नै अर्को निर्वाचन नभएसम्म परिषद्को सदस्यको हैसियतले कार्य गर्न निरन्तरता दिनु भन्ने परमादेशको आदेशसमेत जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदकहरूको निवेदन जिकिर कानूनसम्मत र उचित नदेखिई रिट जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: करूणा श्रेष्ठ

कम्प्युटर: रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७७ साल पुस १९ गते रोज १ शुभम्।

- यसमा समान प्रकृतिको ०७७-WO-०३७०, उत्प्रेषण / परमादेश, कपिल आचार्यसमेत वि. नेपाल इन्जिनियरिङ परिषद् काठमाडौंसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसारको आदेश भएको छ।

## इजलास नं.८

१

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७२-CR-०१०६, वैदेशिक रोजगार कसुर, नेपाल सरकार वि. जीवनराज शाही*

फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तहरूउपरको कसुर वादीले नि:सन्देह रूपमा प्रमाणित गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ भन्ने व्यवस्था गरेको छ। वादीले प्रतिवादीउपर लगाएको अभियोग वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट शङ्कारहित तवरले प्रमाणित गर्नुपर्दछ । अन्यथा त्यसको सुविधा अभियुक्तले पाउने हुन्छ। नेपाल सरकारले कसैउपर अभियोग लगाउनु मात्र पर्याप्त हुँदैन, लगाएको अभियोग वस्तुनिष्ठ तथ्यगत आधार प्रमाणहरूबाट शङ्कारहित तवरले पुष्टि गर्न सक्नुपर्दछ । प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीउपरको अभियोग वादीले शंकारहित तवरले पुष्टि गर्न सकेको नदेखिएकोले

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट प्रतिवादी जीवनराज शाहीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई भएको फैसला अन्यथा नदेखिने।

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट प्रतिवादी जीवनराज शाहीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई भएको मिति २०७१।११।१७ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालसिंह थापा

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७७ साल साउन १५ गते रोज् ५ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान,** *०७१-CR-१५९९, कर्तव्य ज्यान, मेची भन्ने बलबहादुर चुदारा वि. नेपाल सरकार*

मृतक रेनुकाको जेठाजु तथा प्रतिवादी बलबहादुरका सहोदर दाजु प्रेम चुदाराले मृतकलाई यिनै पुनरावेदक प्रतिवादीले कर्तव्य गरी मारेको भनी जाहेरी दिएको र सोही बेहोरालाई पुष्टि गरी निज जाहेरवालाले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको, मौकामा कागज गर्ने नविना वि.क., खगेश्वरी परियार, गुमादेवी आचार्य, जाय चुदारासमेतले मृतकलाई यी पुनरावेदक प्रतिवादीले मारेका हुन् भनी यी पुनरावेदकउपर किटानी पोल गरी गरेको मौकाको कागज बेहोरालाई पुष्टि गरी अदालतको बकपत्रमा लेखाइदिएका, पटकपटक झगडा भइरहन्थ्यो सोही कारणले छोराले बुहारीलाई कर्तव्य गरी मारेको जस्तो लाग्दछ भनी प्रतिवादीकी आमा सहप्रतिवादी नन्दकली चुदाराले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको बयानलाई यी प्रतिवादीले यो यस कारणले अन्यथा हो भनी भन्न नसकेको, आफैँ झुन्डी मृतकले आत्महत्या गरेकी हुन् भन्ने निज प्रतिवादीको अदालतको इन्कारी बयान मिसिल संलग्न प्रमाणबाट यकिन पुष्टि हुन नआएको र प्रतिवादीको मौकाको साबिती बयान, मृतकको लास प्रकृति मुचुल्का एवं शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका प्रत्यक्ष प्रमाणबाट समर्थित हुन आएकोसमेतबाट पुनरावेदक प्रतिवादीले मृतकलाई मार्ने मनसायले मृतकको टाउको समाई बटारी हत्या गरेको प्रमाणतः पुष्टि हुन आएको, पुनरावेदकले मृतकलाई मारेका हुन् भन्ने प्रतिवादीको सहोदर दाजु जाहेरवाला प्रेम चुदाराको पोललाई प्रतिवादीले तथ्यगत रूपमा अन्यथा हो भन्न नसकेकोसमेत हुँदा मृतकलाई यिनै पुनरावेदक प्रतिवादी मेची भन्ने बलबहादुर चुदाराले कर्तव्य गरी मारेको प्रमाणतः पुष्टि हुन आएकाले निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरू बागलुङ जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत बागलुङको फैसला अन्यथा देखिन नआउने।

प्रतिवादी मेची भन्ने बलबहादुर चुदाराको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं.बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहऱ्याएको सुरू बागलुङ जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत बागलुङबाट मिति २०७२।१।९ गते भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(क) मा कुनै कसुरको सजाय साबिक ऐनमा

मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको भन्दा बढी रहेछ भने संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १७७(२) मा ज्यान मार्ने कसुर गर्ने, गराउने व्यक्तिलाई जन्मकैदको सजाय मात्र हुने भनी कानूनी व्यवस्था रहे भएको देखिएको र फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने कानूनी व्यवस्था भएको साथै ऐ. दफा ४०(२) मा कानूनमा कुनै कसुर गरेबापतमा सर्वस्वको सजाय हुने रहेछ भने यो ऐन प्रारम्भ भएपछि त्यस्तो कसुरमा सजाय निर्धारण गर्दा सर्वस्व हुने गरी सजाय गरिने छैन भन्ने व्यवस्था रहेकोबाट समेत प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैद नहुने भई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने ठहर्ने। प्रतिवादी मेची भन्ने बलबहादुर चुदाराको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: सोनी श्रेष्ठ

कम्प्युटर: शान्ति तामाङ

इति संवत् २०७७ साल आषाढ १२ गते रोज ६ शुभम्।

## इजलास नं.९

**१**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** *०७६-RC-००५६, कर्तव्य ज्यान र जबरजस्ती चोरी, नेपाल सरकार वि. प्रेम गन्धर्व*

मृतक रूपा साहनी वृद्ध अवस्थाकी रही निजसँग बस्ने नातिनीसमेत अन्यत्र गएको अवस्थामा मिति २०७३।१२।१५ गतेका दिन निज प्रेम गन्धर्व झारफुक गर्न भनी रूपा साहनीको घरमा गएको, रूपा साहनीले राम्रो बार हेराई झारफुक गरौला भनेपछि निज प्रेम गन्धर्व उक्त घरबाट निस्की गएको र पुनः सोही रूपा साहनीको घरमा गई बाहिर बोलाई निजले घाँटीमा समाई गला दबाएको र मुक्काले कञ्चटसमेतमा प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेको र गहना लिई भागेको हो भन्ने बेहोरा उल्लेख गरी खिमबहादुर साहनी, खिमा साहनीसमेतले घटना विवरण कागजसमेत गरिदिएको देखिएको छ । वादी पक्षका साक्षी खिमबहादुर साहनी, रोपबहादुर साहनी, नरबहादुर साहनी, मानबहादुर साहनी र खिमा सहानीसमेतले अदालतमा आई वारदात पुष्टि हुने गरी बकपत्र गरिदिएकोसमेत पाइन्छ । यसरी प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी, प्रतिवादीको साबिती बयान, घटनास्थल मुचुल्का, लास जाँचमुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन, घटना विवरणमा उल्लिखित बेहोरासमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट एक्ली, वृद्ध र निरीह महिलालाई यी प्रतिवादीले मनसायपूर्वक वारदात घटाई कर्तव्य गरी मारी मृतकको गहनासमेत चोरी गरी लगेको र घरमा गई बसेको भन्ने पुष्टि हुन आएको हुँदा निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद सजाय हुने र चोरीतर्फ कसुरदार ठहऱ्याउने सुरू फैसला सदर गर्ने गरी भएको उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

प्रतिवादी प्रेम गन्धर्वलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने गरी मिति २०७४।३।२० मा सुरू बागलुङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) बमोजिम सर्वस्वसहित हटाई मुलुकी ऐन, अ.बं १८८ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद कायम हुने गरी व्यक्त गरेको रायसँग असहमत भई जन्मकैदको सजाय हुने ठहऱ्याई केही उल्टी र चोरीतर्फ १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहऱ्याएको उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासको मिति २०७५।८।४ को फैसला मनासिब नै देखिँदा साधक सदर हुने ठहर्छ । तर उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासले जबरजस्ती चोरीको कसुरमा जरिवानाबापत समेत कैद १० वर्ष सजाय हुने सुरू अदालतको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई गरेको फैसला साबिक कानूनी व्यवस्थाको सन्दर्भमा मिलेको देखिए तापनि केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ख) मा "**कुनै कानूनअन्तर्गत कुनै अदालतमा दायर भएको कुनै फौजदारी कसुरका मुद्दामा सजाय गर्नुपर्दा सोही कानूनबमोजिम नै गर्नुपर्ने छ तर कुनै फौजदारी कसुरको सजाय मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएभन्दा बढी रहेछ भने मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुने छ**" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिएको र सो सन्दर्भमा विचार गर्दा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ मा चोरी तथा डाँकासम्बन्धी कसुर शीर्षकअन्तर्गत दफा २४२ मा जरिवाना गर्ने र सोही संहिताको दफा ४६ मा ठहर भएको जरिवाना नतिरेको हकमा सम्म थुनामा बस्न पर्ने व्यवस्था रहेको भए पनि जरिवानाबापत नै कैदको सजाय गर्ने कानूनी व्यवस्था नभएकोले प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी प्रेम गन्धर्वलाई जबरजस्ती चोरीको कसुरमा ठहर भएको जरिवानाबापत १० (दश) वर्षको कैदको सजाय हुने नदेखिने ।

इजलास अधिकृत: मन्दिरा शाही

कम्प्युटर: सुप्रभा अर्याल

इतिसंवत् २०७६ साल मङ्सिर १६ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. श्री तेजबहादुर के.सी.**, *०७७-WH-००८७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण / उत्प्रेषण / परमादेश, विकास थापा मगर वि. बालसुधार गृह भक्तपुरसमेत*

थुनामा रहेका बालबालिका, गर्भवती महिला, दुध खुवाउने महिला, वृद्ध, अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूलाई उनीहरूले गरेको कसुरको प्रकृति, पीडितलाई पुऱ्याएको क्षति, हुने कैद सजाय र निजले भुक्तान गरेको सजायसमेतलाई विचार गरी हाल महामारीको अवस्थामा त्यस्ता व्यक्तिहरूलाई मौजुदा कानूनबाट केही छुट तथा सहुलियत दिन सकिने भए दिनु भन्नेसम्म रहेको देखिन्छ। निवेदिका हरिमाया थापाका छोरा विकास थापामगरलाई जबरजस्ती करणी जस्तो जघन्य फौजदारी मुद्दामा दुई तह अदालतबाट ८ वर्ष ८ महिना कैद सजाय तोकिई बालसुधार गृहमा रही २ वर्ष ४ महिना १८ दिन मात्र कैद भुक्तान गरेको, निजको उमेर कसुर गर्दाको अवस्थामा १७ वर्ष भई नाबालक भएको कारण ठहरेको सजायको दुई तिहाइ मात्र कायम हुने गरी ठहरेको सजायमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन,

२०७५ को दफा ३६(४) बमोजिम पाउने छुटको सुविधा पाइसकेको, शारीरिक तथा मानसिक रूपमा अपाङ्गता भएको महिलालाई जबरजस्ती करणी गरेकोसमेतका घटना परिस्थितिसमेतलाई मध्यनजर गर्दा निजलाई सजायमा छुट दिई थुनामुक्त गरी निवेदिकाको जिम्मा लगाइहाल्नुपर्ने अवस्था देखिएन । दण्ड भनेको अपराध गर्ने व्यक्तिले कानूनबमोजिम सजाय पाई समाजलाई न्याय व्यवस्थाप्रति आश्वस्त पार्ने प्रक्रिया हो, जसबाट राज्य र न्यायालयप्रति जनआस्था तथा भरोसामा अभिवृद्धि हुन जान्छ । त्यसैले कसुरको मात्राअनुसारको सजाय कसुरदारलाई दिइनु पर्छ । सो कुरालाई ध्यानमा राखेर नै न्यायकर्ताबाट निर्धारण गरिएको सजायलाई कुनै पनि बहानामा घटाएमा वा मिन्हा गरेमा न्यायको मर्मविपरीत भई कसुरदारको आपराधिक मनोबल उच्च हुन जाने र समाजमा आपराधिक गतिविधि वृद्धि हुन जाने भएकोले जघन्य कसुरमा सजाय पाएको निवेदिकाको छोरालाई थुनामुक्त गरी साधिकार अदालतबाट भएको फैसला कार्यान्वयनमा प्रतिकूल असर पर्ने गरी आदेश जारी गर्नुपर्नेसम्मको अवस्था विद्यमान रहेको नदेखिने ।

निवेदिका हरिमाया थापाको छोरा विकास थापामगरले शारीरिक तथा मानसिक रूपमा अपाङ्गता भएको महिलालाई जबरजस्ती करणी गरेको कसुर कायम भई जम्मा १३ वर्ष कैद हुनेमा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(४) बमोजिम दुई तिहाई सजाय छुट भई ८ वर्ष ८ महिना कैद सजाय कायम भएको र हालसम्म २ वर्ष ४ महिना १८ दिन मात्र कैद भुक्तान गरेको देखिएको, निजको उमेर कसुर गर्दाको अवस्थामा १७ वर्ष भए पनि नाबालकको कैद सुविधा प्राप्त गरेको देखिएको तथा निजलाई राखेको बालसुधार गृहमा सङ्क्रामक रोग कोभिडबाट संक्रमित भई निजलाई असर पुग्न गएको भनी सम्बन्धित निकायबाट कुनै जानकारी नआएको अवस्थामा साधिकार अदालतबाट तहतह फैसला भई कैद भुक्तानका लागि बालसुधार गृहमा राखेको लाई गैरकानूनी थुना भन्न मिलेन । निवेदिकाको छोरा विकास थापा मगरलाई थुनामुक्त गरी आमाको जिम्मा लगाइपाउँ भन्ने निवेदन मागदाबीको कानूनी आधार र औचित्य पुष्टि हुन नसकेकाले मागदाबीअनुसार बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिलेन । यसैगरी काभ्रेपलाञ्चोक जिल्ला अदालतको मिति २०७७।४।५ र उच्च अदालत पाटनको मिति २०७७।५।३० को आदेशमा कुनै कानूनको त्रुटि नदेखिँदा उत्प्रेषण आदेश जारी गर्न मिलेन । साथै बन्दीप्रत्यक्षीकरण तथा उत्प्रेषणको आदेश जारी नभएको अवस्थामा प्रतिवादी विकास थापामगरलाई आमाको जिम्मा लगाइपाउँ भन्ने निवेदन जिकिरसमेत कानूनसम्मत र न्यायोचित नदेखिएकोले परमादेशको आदेशसमेत जारी हुन नसक्ने । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः हेमराज शर्मा

इतिसंवत् २०७७ साल मङ्सिर २२ गते रोज २ शुभम् ।

## इजलास नं.१०

१

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा**, ०७४-CR-१०८०, ०७५-

CR-१२६९, कर्तव्य ज्यान, अनुप राईसमेत वि. नेपाल सरकार, कृष्ण चौधरी वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीहरू तीनै जना अदालतमा बयान गर्दा घटना भयो भनिएको समयमा आफूहरू घटनास्थलमा नरही आ-आफ्नो घरमा रहेको, साइकलबाट लडी निरबहादुर राई घाइते भएको कुरा सुनेका हौं भनी कसुरमा इन्कार भई बयान गरेको पाइन्छ तर अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा भने यकी चाउचाउ फ्याक्ट्री चोकमा निरबहादुर राई रक्सीले मातेको अवस्थामा साइकलमा आएका थिए । निजले तिमीहरू यहाँ किन बसेको नियत ठिक छैन भन्दै हामीहरूलाई गालीगलौज गरेकाले हामीहरूले लातमुक्का तथा फलामको घन तथा रडले प्रहार गरेका हौं । निज ढली बेहोस भएकोमा रामबहादुर सिन्चुरी हो-हल्ला गर्दै आएपछि हतियार र घाइतेसमेतलाई छाडी भागी गएका हौं भनी कसुरमा साबित भई बयान गरेको पाइन्छ । अदालतमा कसुरमा इन्कार रहने प्रतिवादीहरूको साक्षी शर्मिला राईले अदालतमा बकपत्र गर्दा निरबहादुर राईलाई ४ बजेको समयमा साइकलबाट लडेको देखेको हुँ । प्रतिवादीहरू त्यहाँ थिएनन् । सेन्चुरी बाजेले साइकल र सामान उठाई लगेका हुन् भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । घाँटी, अनुहार, छाती तथा काखीमा चोटपटक तथा निलडाम देखिएको, ३ वटा करङसमेत भाँचिएको शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिएको अवस्थामा घाउ चोटको प्रकृतिबाट पनि निरबहादुर राईको मृत्यु साइकलबाट लडी भएको भनी अनुमान गर्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादीहरूका साक्षीको बकपत्रलाई प्रमाणमा लिन मिल्ने देखिँदैन । निरबहादुर राईउपर यी प्रतिवादीहरूले रातको ८ बजे आक्रमण भएको कुरा प्रत्यक्षदर्शी रामबहादुर सिन्चुरीको कागजबाट देखिन्छ । सो समयमा आफू घटनास्थलमा नरहेको भनी Alibi को जिकिर लिने प्रतिवादीहरूले सो कुरा साक्षी वा अन्य प्रमाणद्वारा पुष्टि गर्न सकेको पाइँदैन । अन्यत्र थिएँ भनी जिकिर लिएको अवस्थामा सो जिकिर लिने पक्षले नै सो कुराको पुष्टि गर्नुपर्दछ । यसै सम्बन्धमा वसन्त परियार वि. भैरवबहादुरको जाहेरीले नेपाल सरकार (ने.का.प.२०७६, नि.नं.१०२४२, अङ्क ४) को मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार मुद्दामा *"प्रतिवादीले वारदातको समयमा आफू घटनास्थलमा नभई अन्यत्र छु भनी alibi को जिकिर लिन्छ भने सो जिकिरलाई प्रमाणित गर्ने भार पनि निज अभियुक्तउपर नै रहन्छ । त्यस्तो alibi को जिकिर तथ्यपरक, निश्चयात्मक तथा लिखित प्रमाणबाट समर्थित हुनसके मात्र सो जिकिर लिने व्यक्तिको पक्षमा प्रमाणयोग्य हुनसक्ने हुन्छ र सो जिकिर त्यस्तो निर्विवाद र तथ्यपरक प्रमाणबाट स्थापित हुन नसके त्यस्तो जिकिर लिने व्यक्तिको विरूद्ध नै प्रमाण लाग्ने"* भनी व्याख्या गरिएको पाइन्छ । *"आफू अन्यत्र रहेको भनी अन्यत्रको दाबी लिनेले कानूनतः आफू त्यसरी अन्यत्र रहेको पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ । केवल लगाइएको आरोपबाट सफाइ पाउने उद्देश्यले मात्र अन्यत्र रहेको थिएँ भन्ने कुरा तर्कयुक्त र स्वीकार्य हुन नसक्ने"* भनी टीकाराम राईसमेत वि. आशा नेवार (राई) को जाहेरीले नेपाल सरकार भएको (ने.का.प.२०७१, नि.नं. ९२८३, अङ्क ११) को कर्तव्य ज्यान मुद्दामा सिद्धान्त प्रतिपादन भएको पाइन्छ । साथै *"अन्यत्र*

*स्थलमा रहेको (Alibi) को जिकिर स्वतन्त्र र तथ्यपूर्ण प्रमाणबाट समर्थित भएमा मात्र प्रमाणको लागि ग्राह्य हुनसक्ने । वारदातको दिन र समयमा आफू घटनास्थलमा उपस्थित नरही अन्यस्थलमा रहेको भनी अन्यत्रस्थल (Alibi) को जिकिर लिने व्यक्तिले घटना हुँदाका बखत आफू उपस्थित रहेको भनिएको स्थानबाट घटना भएको स्थानको दूरी (Distance) यति धेरै छ कि घटना भएको समयमा घटनास्थलमा उपस्थित हुन असम्भव छ भनी अकाट्य र विवादरहित प्रमाणबाट प्रमाणित गर्नुपर्ने । एकै समयमा एक व्यक्ति दुई ठाउँमा उपस्थित हुन असम्भव छ भनी अभियुक्तले प्रमाणबाट स्थापित गर्न सक्नुपर्ने । अन्यत्र स्थल (Alibi) को जिकिर अकाट्य र निर्विवाद प्रमाणबाट स्थापित र प्रमाणित हुन नसकेमा सो जिकिर निजैका विरूद्ध प्रमाण लाग्ने हुन्छ । प्रचलित नेपाल कानूनबमोजिम सजायमा कमी वा छुट हुने वा सजायबाट रिहाई पाउने कुनै कुराको जिकिर प्रतिवादीले लिएमा सो कुराको प्रमाण पुऱ्याउने भार प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७(१) बमोजिम निज प्रतिवादीको हुने"* भनी दिपकबहादुर घिमिरे वि. नानीराम परियारको जाहेरीले नेपाल सरकार भएको (ने.का.प.२०७१, नि.नं.९१४४, अङ्क ४) को कर्तव्य ज्यान मुद्दामा समेत व्याख्या भएबाट प्रस्तुत विवादमा प्रतिवादीहरूबाट मिति २०७०।४।३ गते राति घटनास्थलमा थिइन भन्ने जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

मृतक निरबहादुर राईको प्रतिवादीहरू अनुप राई, अर्जुन राई, कृष्ण चौधरीले निरबहादुर राईलाई मरणासन्न हुने गरी लातमुक्का तथा फलामे हतियारले कुटपिट गरेको देखेको कुरा प्रत्यक्षदर्शी रामबहादुर सिन्चुरीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष मौकामा कागज गर्दा र अदालतमा बकपत्रसमेत गरी पुष्टि गरेको, कुटपिटका कारण मृतक निरबहादुर राईको घाँटी, अनुहार, छाती तथा काखीमा निलडाम देखिएको, करङ भाँचिएकोसमेत देखिएको, प्रतिवादीहरू अदालतमा कसुर गरेको कुरामा इन्कार भए पनि अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष साबित भएकोमा अदालतमा भएको इन्कारीलाई प्रमाणद्वारा पुष्टि गर्न सकेको अवस्थासमेत नदेखिएकाले अभियोग मागदाबीबमोजिमको कसुर यी पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले गरेको कुरा पुष्टि हुन आउने।

प्रतिवादीहरूले निरबहादुर राईको कर्तव्य गरी हत्या गरेको पुष्टि हुन आएकाले निजहरूलाई सुरू अदालतले ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. बमोजिम जनही जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरी गरेको फैसलालाई सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः तारादेवी महर्जन

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सेना

इति संवत् २०७७ साल असोज ७ गते रोज ४ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** ०७६-CR-०८१६, कर्तव्य ज्यान, लक्ष्मीप्रसाद अधिकारी वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी लक्ष्मीप्रसाद अधिकारीले उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासले यसै मुद्दाको लगाउमा रहेको जबरजस्ती करणी र चोरीको

वारदात स्थापित नभएको शंकास्पद प्रमाणको आधारमा सजाय गरेको नमिलेकोले सोतर्फसमेतमा सफाइ पाउँ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरको सम्बन्धमा हेर्दा, यसै मुद्दाको रेकर्ड मिसिलमा संलग्न उक्त जबरजस्ती करणी र चोरी दुवै मुद्दामा प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय हुने गरी सुरू झापा जिल्ला अदालतले गरेको फैसला सदर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगर इलाम इजलासबाट फैसला भई मुद्दा अन्तिम भएको देखिँदा सोतर्फ केही बोलिरहन नपर्ने।

प्रतिवादी लक्ष्मीप्रसाद अधिकारीले परिवर्तित नाम ०४-५-ब लाई जबरजस्ती करणी गर्दै गरेको मृतक परिवर्तित नाम ०४-५-ब/२ ले देखेकीले जबरजस्ती करणी गरेको कुरा अरूलाई थाहा हुन्छ भन्ने डरले प्रतिवादी लक्ष्मीप्रसाद अधिकारीले परिवर्तित नाम ०४-५-ब/२ लाई बरामद भई आएको बन्चरोले प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं.,१३(१) नं. को कसुर अपराध गरेको देखिँदा ऐ.१३(१) नं.अनुसार सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरी सुरू झापा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७६।२।८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा केही परिवर्तन गरिरहनुपर्ने अवस्था आएन। उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७६।२।८ मा भएको फैसला सदर हुने।

मिति २०७५।५।१ देखि लागु भएको मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) र फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ दफा ५ बमोजिम सर्वस्व हुने गरी सजाय गर्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादी लक्ष्मीप्रसाद अधिकारीलाई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने।

इजलास अधिकृत: नारायण सापकोटा
कम्प्युटर: चन्द्रावती तिमल्सेना
इति संवत् २०७७ साल असोज १३ गते रोज ३ शुभम्।

## इजलास नं.११

१

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७५-CR-१७६६, कर्तव्य ज्यान र डाँका, नेपाल सरकार वि. रामजन्मप्रसाद यादव*

प्रस्तुत मुद्दामा मृतक अशोककुमार पाण्डेको कर्तव्य गरी मार्नमा यी प्रतिवादीसमेतको संलग्नता रहेको मिसिल संलग्न कागजातहरू तथा सहअभियुक्तहरूको पोलसमेतका प्रमाणहरूबाट समर्थन हुन आएको देखिन्छ । घटनास्थल प्रकृति मुचुल्काबाट प्रतिवादी रामजन्मप्रसाद यादवसमेत उपर यी प्रतिवादीसमेतलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ र १३(३) बमोजिमको कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय हुनेमा निज प्रतिवादीको वारदात हुँदाको मिति २०६६।१०।८ देखिएकोमा उक्त मितिमा प्रतिवादी जन्मदर्ता मिति २०५३।४।९ देखिएबाट वारदात हुँदाको अवस्थामा निजको उमेर १४ वर्ष नपुगी १३ वर्ष ५ महिना २९ दिन मात्र पुगेको देखिन्छ । सो देखिँदा निजको उपर १४ वर्षभन्दा कम उमेरको नाबालक भए पनि निज

प्रतिवादीको उक्त कसुर संलग्नता रहेको देखिई निजलाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(२) बमोजिम ३ महिना कैद हुने गरी र डाँकातर्फ यी प्रतिवादीलाई सफाइ दिने गरी भएको बारा जिल्ला अदालतको मिति २०७३।०७।२२ को फैसलालाई सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट भएको सो फैसलालाई अन्यथा गर्नुपर्ने देखिन नआउने।

प्रतिवादी रामजन्मप्रसाद यादवलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय हुनेमा निज प्रतिवादी वारदातका समयमा १४ वर्षमुनिको नाबालक भएकोले निजलाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(२) बमोजिम ३(तीन) महिना कैद हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत जनकपुर, अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट मिति २०७५।०९।०६ मा भएको फैसला मिलेको नै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा ऐ. १३(३) नं. बमोजिम सजाय गरी डाँकातर्फ चोरीको महलको १ र ६ नं. को कसुरमा ऐ. महलको ६ नं. बमोजिम सजाय गरी डाँका गरेको रकम रू. २,००,०००।- (दुई लाख रूपैयाँ) ऐ. महलको १०(३) नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट जाहेरवालालाई दिलाई भराई पाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत : मिनबहादुर कुँवर / गोविन्द आचार्य

इति संवत् २०७७ साल असार १ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७७-WH-०१३५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, महादेव तिमिल्सिना वि. कारागार कार्यालय, जगन्नाथदेवल, काठमाडौंसमेत*

कुनै पनि कसुरका सम्बन्धमा पछि जारी भएको नयाँ संहिता वा एकीकृत कानून वा तिनीहरूमा संशोधन गरेको दफाले सजाय घटाएको वा अभियुक्तलाई सुविधा दिएको छ भने कानूनमा स्पष्टरूपमा अन्यथा व्यवस्था गरेकोमा बाहेक अन्य अवस्थामा सिद्धान्ततः त्यस्तो पछिल्लो कानून वा दफाको प्रयोग गर्ने गरिन्छ। उक्त मुद्दा तत्कालीन मुलुकी ऐन, २०२० को खोटा चलनको महलको ८ नं. तथा आपराधिक कार्य संगठित अपराध निवारण ऐन, २०७० को दफा ३(१) अन्तर्गत चलेको भए तापनि मिति २०७५।५।२६ मा उच्च अदालत पाटनबाट फैसला हुँदाका बखत मुलुकी फौजदारी संहिता, २०७४, मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४, प्रचलित फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ र केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ लागु भइसकेको छ। यी ऐनमा साबिकको मुलुकी ऐन तथा अन्य ऐनबमोजिम कसुर कायम गरी दायर भएका फौजदारी मुद्दामा साबिकको ऐनले भन्दा घटी सजाय तोकेको रहेछ भने त्यसलाई कसरी कार्यान्वयन गर्ने भनी उल्लेख गरेको छ। सो सम्बन्धमा उक्त ऐनका सम्बन्धित दफाका व्यवस्थालाई हेर्नुपर्ने हुन्छ। सो सन्दर्भमा हाल प्रचलित फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा

कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा **"कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नु पर्नेछ ।"** भन्ने कानूनी व्यवस्थाका साथै केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ख) मा **"...कुनै फौजदारी कसुरको सजाय मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएभन्दा बढी रहेछ भने मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुनेछ ।"** भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । उक्त दुवै ऐनका प्रावधान हेर्दा कुनै कसुरमा पछि बनेको ऐनमा कम सजाय हुने रहेछ भने पछि बनेको त्यस्तो ऐनबमोजिम कम सजाय हुने व्यवस्था नै लागु हुने देखिन आयो । यी उपर्युक्त कानूनको सन्दर्भमा उक्त खोटा चलनसम्बन्धी कसुरमा हालको प्रचलित कानूनमा भएको सजाय हेर्दा, यस्तो कसुरमा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २५७(२) बमोजिम जरिवाना रू.७०,०००।- हुने देखियो । यसरी उक्त जरिवानाबापत कैद गर्दा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १६१(२) बमोजिम दिनको रू.३००।- का दरले कट्टा गर्दा ७ महिना २४ दिन कैद सजाय हुने देखिने ।

यी निवेदक मिति २०७२।१२।२२ देखि थुनामा रहेकोमा निजलाई लागेको कैद ४ वर्ष ६ महिना मिति २०७७।०६।२१ मा भुक्तान भई मिति २०७७।६।२२ देखि हालसम्म जरिवानाबापत थुनामा रहेकोमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थानुसार मिति २०७७।६।२२ देखि जरिवानाबापत थुनामा बस्नुपर्ने अवधि ७ महिना २४ दिन थप गर्दा निवेदकको मिति २०७८।०२।१६ मा जरिवानाबापतको कैदसमेत भुक्तान भई मिति २०७८।०२।१७ मा निज थुनाबाट छुट्नुपर्ने देखिन आउँछ । हालको विद्यमान कानूनी व्यवस्थाको आधारमा निज उक्त कसुरमा जरिवानाबापतको कैदसमेत जोड्दा निवेदक मिति २०७८।०२।१७ गते छुट्ने देखिँदा निजलाई साबिकको कानूनी व्यवस्थाको आधारमा जरिवानाबापत समेत लाग्ने कैद ठेक्दा निज मिति २०८१।०६।२१ सम्म थुनामा बस्नुपर्ने भई ऐ.२२ गते थुनामुक्त हुने भनी कैद ठेकी दिएको काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७७।०३।०१ को संशोधित कैदी पुर्जी कानूनबमोजिम भएको नदेखिँदा बदर गरिदिएको छ । अत: निवेदक महादेव तिमिल्सिनाको उपर्युक्तानुसार काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७७।०३।०१ को संशोधित कैदी पूर्जीबमोजिम जरिवानाबापतको कैद मिति २०८१।०२।२१ गतेसम्म हुने नभई मिति २०७८।०२।१६ मा जरिवानाबापतको कैद भुक्तान हुने देखिँदा निजलाई सोहीबमोजिमको संशोधित कैदी पुर्जी दिनु र जरिवानाबापतको कैदमा निज मिति २०७७।०६।२२ देखि हालसम्म थुनामा रहेकोले सो थुनाको दिनलाई जरिवानाबापतको रकममा कट्टी गरी जरिवानाबापत बाँकी रकम बुझाए र निजलाई अन्य कुनै थुनामा राख्न नपर्ने भए थुनाबाट मुक्त गरिदिनु र निजले जरिवाना नबुझाए निजलाई जरिवानाबापत मिति २०७८।०२।१६ गतेसम्म थुनामा राखी ऐ.१७ गतेदेखि अन्य कुनै मुद्दामा थुनामा राख्नु नपर्ने भए थुनाबाट मुक्त गरिदिने गरी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी

हुने ।

इजलास अधिकृत: सदिक्षा नेपाल

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इतिसंवत् २०७७ साल मङ्सिर २४ गते रोज ४ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** ०७६-CR-१७३५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. हर्के खत्री

दुईवटा मोटरसाइकलमा आएका ६ जना हतियारधारी भनी ६ जनाको नाम उल्लेख गरी अन्य नचिनेका मानिसहरू भनेको र ६ जनामध्ये एक जना गणेश धामीको मृत्यु भएको र अन्य पाँच जना प्रतिवादीहरूको नाम खुलाइदिएकोमा मौकामा नचिनेका व्यक्ति यी प्रतिवादी नै हुन् भन्ने अन्य विश्वासिलो प्रमाणहरूबाट समर्थित नभएको मौकाको बेहोरा र जाहेरीमा नाम उल्लेख भएकै आधारमा प्रतिवादी आरोपित कसुरमा संलग्न थिए भनी मान्न नमिल्ने ।

प्रस्तुत मुद्दामा कर्तव्य ज्यान जस्तो गम्भीर प्रकृतिको फौजदारी कसुरमा वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाण बेगर केवल जाहेरीमा नाम उल्लेख गरिदिएकै आधारमा कसुरदार कायम गरी सजाय गर्नु तर्कपूर्ण र न्यायोचित नदेखिँदा प्रतिवादी हर्के खत्रीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरू अदालतको फैसला उल्टी गरी सफाइ दिने गरी भएको उच्च अदालत दिपायल महेन्द्रनगर, इजलासको फैसला मनासिब नै देखिएकोले प्रतिवादी हर्के खत्रीलाई अभियोग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी हर्के खत्रीलाई आरोपित कसुरमा अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १५ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद र सोही महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर गरी सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।४।३२ मा भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादी हर्के खत्रीलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने ठहर्‍याई उच्च अदालत दिपायल, महेन्द्रनगर इजलासबाट मिति २०७६।४।२६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : माधव भण्डारी

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७७ साल पौष १५ गते रोज ४ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७०-CR-०९९६, किर्ते जालसाजी, आशाराम मुनकर्मी वि. गणेशबहादुर बजिको*

प्रतिवादी गणेशबहादुर बजिकोले मिति २०४३।१०।१६ मा जिल्ला प्रशासन कार्यालय, भक्तपुरबाट लिएको नागरिकता प्रमाण पत्र नं. १३४१ को नागरिकताको प्रमाणपत्रमा पनि निजको पिताको नाम बलबहादुर बजिको भन्ने उल्लेख छ । पिता बलबहादुर भन्ने रामदास बजिको मिति २०१७।६।१५ र आमाको मिति २०४१।३।२६ मा परलोक भएकोले निजको एकमात्र छोरा गणेशबहादुर बजिको हो भनी स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ बमोजिम नाता प्रमाणितसमेत भइसकेको छ । यिनै मोही प्रतिवादी गणेशबहादुर

बजिकोका छोरा सेनामा नोकरी गर्ने ठुलो भाइ बजिकोले प्रस्तुत मुद्दा सुरू गर्नुअगाडि २०५२ साल चैत्रमा भरेको पारिवारिक लगतमा (कर्मचारी संकेत नं. ३२३८८०) मा रामदास बजिको भनी उल्लेख छ । वादी / निवेदक आसाराम मुनकर्मीले भूमिसुधार कार्यालयमा दिएको निवेदनमा नापीकै समयमा मोहीको मृत्यु भएको भनी उल्लेख गरेका छन् । यो बेहोराले नापी भइसकेपछि वा नापी हुनुपूर्व नै मोहीको मृत्यु भएको हो ? सोबारे स्पष्ट रूपमा खुल्दैन । यो बेहोराले नापी यिनै मोहीबाट भएको हुन सक्ने अवस्थासमेत देखिन्छ । नापीको बखतमा मोही गणेशबहादुर बजिकोको आमा देवीमायासमेतले नापी गराएको भन्ने बेहोरा वादीले उल्लेख गरेका छन् । प्रतिवादी मोहीको आमा देवीमाया रहेकोमा विवाद छैन । निज देवीमायाले नापी गराउँदा फिल्डबुकमा लागेको निजको ल्याप्चे सहीसँग देवीमायाको अन्य लिखतमा लागेको ल्याप्चे सहीसँग मिल्छ मिल्दैन र भिड्छ भिड्दैन ? भनी परीक्षण गराउने कार्यविधि पनि अपनाएको देखिँदैन । नापीको समयमा तयार भएको फिल्डबुकमा लागेको मोही गणेशबहादुर बजिकोको ल्याप्चे सहीसँग नमुना लिएको प्रतिवादी मोही गणेशबहादुर बजिकोको ल्याप्चे मिल्दैन भिड्दैन भन्ने राष्ट्रिय विधि विज्ञान प्रयोगशालाबाट भएको परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिन आउँछ । फिल्डबुकमा लागेको ल्याप्चेको सहीछापसँग नमुना लिएको गणेशबहादुर बजिको ल्याप्चे छाप नमिलेको के तथ्यगत कारण हो ? बुझ्न र खुल्न आएको र सकेको देखिँदैन । तर सोबाहेकको अन्य सबै तथ्य लिखत कागण प्रमाणहरू साबिकमा र हालका जग्गाधनीले प्रतिवादी मोहीसँग चार वर्षका कुत लिएर गरिदिएको भरपाइको व्यवहारले समेत मोही यिनै गणेशबहादुर बजिको रहेको र सोलाई वादी / पुनरावेदक स्वयम्ले स्वीकारेको अवस्था रहेको छ । कुनै तथ्यलाई व्यवहार, आचरण र क्रियाकलापबाट स्वीकार गरिएको हुन्छ भने त्यस तथ्यप्रति ऊ कानूनतः विबन्धित पनि हुने हुन्छ । यस अर्थले पनि प्रतिवादी गणेशबहादुर बजिको आफ्नो कि.नं. १०७, ११६, १२० र १२२ को जग्गाको मोही नै होइनन् भन्ने अवस्था वादी / पुनरावेदकलाई रहे भएको देखिन नआउने ।

अतः माथि उल्लिखित आधार कारणबाट प्रतिवादीले किर्ते कागजको १ नं. अनुसारसमेतको कसुर गरेकोले प्रत्यर्थी प्रतिवादीलाई सजायसमेत गरिपाउँ भन्ने वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहराई सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गरी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६८।५।१९ गते भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः सदिक्षा नेपाल

इति संवत् २०७६ साल मार्ग २७ गते रोज ६ शुभम् ।

## रायबाझी फैसला

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७६-WH-०२६९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, गौतम लामिछाने वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, भरतपुर चितवनसमेत*

प्रस्तुत निवेदनका सन्दर्भमा लिखित जवाफसाथ प्राप्त कागजातहरू हेर्दा फौजदारी

कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १४ बमोजिम म्याद थपको सन्दर्भमा अनुसरण गर्नुपर्ने कानूनी प्रावधानको पालना गरिएको पाइएन, आधार र कारण खुलाएको तथा अनुसन्धान सन्तोषजनक रूपमा भए नभएको कुराको न्यायिक मूल्याङ्कन गरिएको देखिएन । यस प्रकारको कर्मकाण्डी औपचारिकता पूरा गरेको कारणबाट थुनालाई कानूनअनुकूल भएको मान्न नमिल्ने।

जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनको लिखित जवाफसाथ प्राप्त मिति २०७६।११।५ को घटना विवरण कागजबाट मिति २०७६।०८।१४ मा सम्पन्न भएको उपनिर्वाचनलाई खलल पुऱ्याउने तथा असर गर्ने तवरबाट प्रतिबन्धित नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (विप्लव समर्थित) नेता तथा कार्यकर्ताहरू ईश्वर काफ्ले, सुदिप पौडेल, रूपक काफ्ले, सूर्य वि.क. र बिन्तोष मगर भन्ने व्यक्तिसमेतले संगठित रूपमा योजना बनाई मिति २०७६।०८।१२ गते बिहान अं.०३:३६ बजेको समयमा जिल्ला चितवन, भरतपुर म.न.पा.वडा नं.१६ फुर्तीचोकमा सिलिन्डर बम विष्फोट गराएको भन्ने सुनी थाहा पाएको हुँ भनी रोमन राज पन्त, रमेशकुमार सापकोटा र संयोग श्रेष्ठले खुलाई कागज गरेको देखियो । उक्त कागज बेहोराबाट ईश्वर काफ्लेउपर शंका गरिएको देखिन्छ, निवेदक ईश्वर पाण्डेउपर शंका गरिएको देखिँदैन। कुनै पनि व्यक्तिलाई अभियोग लगाएर मात्र हुँदैन, सोसम्बन्धी कसुरसँग निजको सम्बन्ध पनि देखिनुपर्दछ। यी निवेदकउपर जुन वारदातमा संलग्न रहेको भनी पक्राउ गरी हिरासतमा राखिएको हो; सो वारदातमा संलग्नता रहेको देखिने कुनै पनि आधार प्रमाण प्रस्तुत हुन आएको देखिँदैन। कुनै कसुरजन्य कार्य भएको छ भन्दैमा अमुक राजनीतिक विचारप्रति आस्था राखेको भन्ने कुरालाई लिएर अनुसन्धानको नाममा थुनामा राख्नु कानूनअनुकूल हुँदैन। त्यसो गर्दा न्यायिक प्रक्रियाको दुरूपयोग गरेको हुन जाने।

निवेदकलाई नियमित न्यायिक प्रक्रियाबाट साधिकार अदालतको अनुमतिले अनुसन्धानको लागि थुनामा राखिएको हुँदा यस प्रकारको विषयमा रिट क्षेत्रबाट हस्तक्षेप गर्न हुँदैन भनी विपक्षीका तर्फबाट जिकिर लिइएको देखिन्छ। सामान्यतयाः यो जिकिर मनासिब पनि छ र यस अदालतले अनुशरण गरी आएको मान्यताअनुकूल पनि छ । तर यो निरपेक्ष विषय भने होइन। यसका अपवाद अवस्थाहरू पनि छन् । प्रवृत्त धारणा राखी तथा कानूनद्वारा निर्धारित सर्तको पालना नगरी बन्दी बनाइएको अवस्थामा केवल न्यायिक प्रक्रियामा रहेको विषय भन्ने कुराको आडमा बन्दीलाई कानूनी उपचार प्रदान गर्न इन्कार गर्नु मनासिब हुँदैन। न्याय केवल कानूनको सतही औपचारिकता पूरा गर्ने विषय मात्र होइन । संविधानद्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठापूर्वक बाँच्न पाउने र स्वातन्त्रताको उपभोग गर्न पाउने हक संरक्षणसम्बन्धी महत्त्वपूर्ण र संवेदनशील विषय भएकोले न्यायिक प्रक्रियाका केही आधारभूत अन्तरवस्तुमा प्रवेश गरी थुनाको वैधता परीक्षण गर्नु यस अदालतको संवैधानिक जिम्मेवारी देखिन्छ । कुनै प्रहरी कर्मचारीले तथ्य बेहोरा नखुलाई केवल आत्मनिष्ठ तवरबाट "संलग्न रहेको बुझिएको" भन्ने कुराकै आधारमा कुनै व्यक्तिलाई अनुसन्धानका लागि लामो अवधि

हिरासतमा राख्ने कुराको न्यायिक औचित्य प्रमाणित हुन नसक्ने।

निवेदक ईश्वर पाण्डेलाई हिरासत / थुनामा राख्नुपर्नेसम्मको पूर्वावस्था विद्यमान रहेको नदेखिएको, मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १४(६) बमोजिम अनुसन्धान "सन्तोषजनक रूपमा भएको" भनी मान्न सकिने कुनै मनासिब आधार नदेखिएको, केवल एकजना प्रहरी कर्मचारीले कुनै वस्तुगत आधार र कारण उल्लेख नगरी मनोगत रूपमा "संलग्न रहेको बुझिएको" भनी प्रतिवेदन पेस गरेको आधारमा नै निवेदकलाई विगत २८ दिनदेखि थुनामा राखेको देखिएको, अनुसन्धानका लागि थुनामा राख्ने अनुमति माग गर्दा र अनुमति प्रदान गर्दा उचित आधार र कारण खुलाएको नदेखिएको, निवेदकलाई गैरकानूनी तवरबाट प्रवृत्त धारणा राखी बन्दी बनाएको देखिएको र परिणामतः नेपालको संविधानको धारा २० को उपधारा (९) द्वारा प्रत्याभूत स्वच्छ सुनुवाइको हकमा आघात परेको देखिँदा निवेदक ईश्वर पाण्डेलाई तत्काल थुनामुक्त गर्नु भनी नेपालको संविधानको धारा १३३(२) र (३) तथा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७ बमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।

**माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयालको राय**

मिति २०७६।०८।१४ गते भएको उपनिर्वाचनलाई खलल पुऱ्याउने तथा असर गर्ने तवरबाट संगठित रूपमा योजना बनाई मिति २०७६।०८।१२ गते बिहान अं.०३:३६ बजेको समयमा जिल्ला चितवन, भरतपुर म.न.पा.वडा नं.१६ फुर्तीचोकमा सिलिन्डर बम विष्फोट गराएको घटनामा संलग्न व्यक्तिहरूको पहिचान तथा खोजतलास गर्ने क्रममा उक्त घटनामा प्रतिबन्धित नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (विप्लव समर्थित) नेता तथा कार्यकर्ताहरू सुदिप पौडेल, रूपक काफ्ले, सूर्य वि.क. र विन्तोष मगर भन्ने व्यक्तिसमेतको संलग्नता देखिएको हुँदा निजहरूलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १४१(१) र संगठित अपराध निवारण ऐन, २०७० को दफा २(क) अन्तर्गतको कसुर अपराधमा कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भन्ने प्र.नि. रविनबाबु रेग्मीको जाहेरी प्रतिवेदन परेको देखिन्छ। उक्त बम विष्फोटन कार्यमा अटल भनिने ईश्वर पाण्डेसमेतको संलग्नता रहेको भनी बुझिन आएकोले निजलाई खोजतलास गर्ने क्रममा मिति २०७६।१०।२२ गते फेला परेको र निजलाई तत्काल पक्राउ नगरे भागी फरार रहन सक्ने भएकोले निजको नाउँमा जरूरी पक्राउ पुर्जी जारी गरी पक्राउ गरी कानूनबमोजिम कारबाही गरिपाउँ भनी प्र.नि. प्रकाश शाहको थप प्रतिवेदनको आधारमा निवेदक ईश्वर पाण्डेलाई मिति २०७६।१०।२३ गतेका दिन चितवन जिल्ला अदालतबाट जरूरी पक्राउ पुर्जी स्वीकृत गराई प्रहरी हिरासतमा राख्नका लागि चितवन जिल्ला अदालतबाट मिति २०७६।१०।२२ गतेबाटै लागु हुने गरी पहिलो पटक दिन ५, मिति २०७६।१०।२७ मा दोस्रो पटक दिन ८ र मिति २०७६।११।०६ मा तेस्रो पटक दिन ८ को अनुमति लिई अनुसन्धान कार्य भइरहेको भन्ने कुरा लिखित जवाफ तथा लिखित जवाफसाथ

पेस भएको म्याद थपसम्बन्धी कागजातहरूबाट देखिन्छ । यी निवेदक पहिला २०७४ जेठमा रसुवामा पक्राउ परेको, त्यसपछि मिति २०७६।१।७ मा धादिङमा पक्राउ परेको र दुवै ठाउँमा धरौटीमा छुटेको भन्ने निवेदकले दिएको निवेदन बेहोरा तथा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष भएको मिति २०७६।१०।२४ को बयानमा नै उल्लेख भई निज निरन्तर थुनामा रहेको अवस्थासमेत देखिँदैन । निजले अधिकारप्राप्त अधिकारीको बयानमा २०७५ पुसदेखि यस्तो क्रियाकलापमा नभएको बयान दिएको तर मिति २०७६।१।७ मा धरौटी राखी धादिङबाट छुटेको देखिँदा निजको बयानमा एकरूपता पनि देखिँदैन । सुरूमा परेको जाहेरी प्रतिवेदन तथा संलग्न कागजातबाट मिति २०७६।८।१२ को उक्त घटनामा निवेदकको नाम उल्लेख भएको नदेखिए तापनि "समेत" का व्यक्तिहरू भन्ने उल्लेख भएको र सो कागज वा प्रतिवेदनमा उल्लेख भएका व्यक्तिहरू पक्राउ नपरेको वा फरार रहेको अवस्थामा मिति २०७६।१०।१७ गते जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनको खोज तलास तथा पक्राउ गरी दाखिला गर्ने सम्बन्धमा लेखिएको पत्रमा अन्य के, कुन व्यक्तिको संलग्नता छ पहिचान गरी पक्राउ गरी दाखिल गर्ने पत्राचार भएको देखिन्छ । यी निवेदक मिति २०७६।१०।२२ गते पक्राउ परी सोही मितिको प्रहरी प्रतिवेदनमा निजको संलग्नता रहेको भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । निवेदकले अनुसन्धानको क्रममा मिति २०७६।१०।२४ मा गरेको बयानमा आफू उक्त घटनामा संलग्नता नरहेको भनी उल्लेख गरेको भए तापनि मिति २०७६।१०।२४ को अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्षको बयानमा उक्त वारदातमा संलग्न भई फरार रहेका सुदिप पौडेलसँग चिनजान भएको स्वीकार गरेको अवस्थामा यी निवेदक वारदातमा संलग्नै थिएनन् भनी साधिकार अदालतबाट मात्र प्रमाण मूल्याङ्कनपछि यकिनमा पुग्न सक्ने ।

एउटा साधिकार निकाय जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनले अनुसन्धानको लागि मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १४१ र संगठित अपराध निवारण ऐन, २०७० को दफा २(क) को कसुर अपराध मुद्दामा अर्को साधिकार निकाय जिल्ला सरकारी वकिल कार्यालय, चितवनमार्फत संगठित अपराध निवारण ऐन, २०७० को दफा १४ बमोजिम अनुसन्धानको लागि म्याद थप गरी प्रहरी हिरासतमा राखी पाउन माग गरेको देखिन्छ । उक्त ऐनको दफा १४ मा भएको व्यवस्थाबमोजिम "संगठित अपराधको अनुसन्धानको लागि त्यस्तो अपराधको आरोप लागेको व्यक्तिलाई अनुसन्धानको प्रगतिको आधारमा अदालतको अनुमति लिई पटकपटक गरी ६० दिनसम्म राख्न सकिने छ" भन्ने भएको कानूनी व्यवस्थाबमोजिम चितवन जिल्ला अदालतबाट मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १४ बमोजिम अनुसन्धानको लागि प्रहरी हिरासतमा राख्न अनुमति प्रदान भई निवेदक कानूनबमोजिम नै थुनामा रहेको भन्ने चितवन जिल्ला अदालतको लिखित जवाफ तथा हिरासतमा राख्ने अनुमति दिइएकोसम्बन्धी पत्रको प्रतिलिपिसमेतबाट देखिन्छ । संगठित तथा विष्फोटक पदार्थ जस्तो फौजदारी प्रकृतिको

अभियोग लागेको अवस्थामा कानूनबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी सक्षम अदालतले मुद्दा हेरिरहेको अवस्थामा अभियोग लागेका व्यक्तिले सम्बन्धित अदालतबाटै सफाइ प्राप्त गर्न वाञ्छनीय हुन्छ । गम्भीर प्रकृतिको विष्फोटक पदार्थ प्रयोग भएको भनिएको मुद्दामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणबाट सक्षम अदालतमा मुद्दा चलिरहेको व्यक्तिलाई राखिएको थुनाको चुनौती दिँदा असाधारण अवस्था विद्यमान भएको, बदनियत भएको प्रचूरतासहितको प्रमाण र अवस्था विद्यमान Prime Facie रूपमा देखिनुपर्दछ । निवेदकउपर लागेको कसुरको सम्बन्धमा अनुसन्धान भई तल्लो अदालतबाट कानूनबमोजिम अनुसन्धानको लागि अनुमति प्रदान गरी मुद्दा हेरिरहेको अवस्थामा सर्वोच्च अदालतबाट तल्ला अदालतमा चलिरहेका मुद्दामा हस्तक्षेप गर्दा त्यस्ता अदालत वा न्यायिक निकायको क्षेत्राधिकारमा हस्तक्षेप गरेको देखिने गरी अनुसन्धान कार्य पूरा हुन बाँकी नै रहेको अवस्थामै निवेदकको थुना गैरकानूनी भयो भनी भन्न नमिल्ने हुँदा निवेदकले माग गरेबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरण जारी गर्न मिलेन । बन्दीलाई यातना दिएको, अन्यत्र सार्न सक्ने वा बेपत्ता पार्न सक्ने भन्ने अवस्था रिट निवेदनमा प्रस्तुत गर्न नसकेको देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: धनबहादुर कार्की

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इतिसंवत् २०७६ साल फाल्गुन १९ गते रोज २ शुभम् ।